कुरुक्षेत्र महात्तम

ॐ

✆ 01744-222758

श्री कुरुक्षेत्र जीर्णोद्धार समिति (रजि: 1921)

गीता भवन ट्रस्ट, ब्रह्म सरोवर तट, कुरुक्षेत्र

गीता भवन ट्रस्ट बिल्डिंग

गीता भवन का निर्माण 1921-22 में रीवा नरेश द्वारा करवाया गया था यह ब्रह्म सरोवर के उत्तरी दिशा में है गीता भवन परिसर में भव्य मंदिरों के दर्शन, अंध-विकलांग आश्रम, ठहरने के लिये कमरे एंव लंगर की समुचित व्यवस्था उपलब्ध है।

कुरुक्षेत्र का इतिहास

मूल्य : बारह रुपया

प्रकाशक :

लक्ष्मी प्रकाशन

4734, बल्लीमारान, दिल्ली-110006

दूरभाष : 3917707

प्रकाशक : लक्ष्मी प्रकाशन
4734, बल्लीमारान,
दिल्ली-110006

पुस्तक : कुरुक्षेत्र का इतिहास

संस्करण : नवीनतम

मूल्य : बारह रुपया

शब्द सज्जा : श्री साईं क्रिएशन्स
चावड़ी बाज़ार,
दिल्ली-110006

लक्ष्मी प्रकाशन
4734, बल्लीमारान, दिल्ली-110006
दूरभाष : 3917707

अनुक्रमणिका

1. कुरुक्षेत्र 9
2. प्रमुख तीर्थों के नाम 10
3. कुरुक्षेत्र में सूर्यग्रहण का महत्व 10
4. ब्रह्मसुर या कुरुक्षेत्र सरोवर 14
5. सन्निहित सरोवर 15
6. स्थाण्वीश्वर सरोवर 15
7. श्री दुःख भजनेश्वर महादेव मंदिर 16
8. शेखचिल्ली का मकबरा 17
9. गुरुद्वारा छटी पातशाही 17
10. बिरला मंदिर; गीता भवन 18
11. श्री जयराम आश्रम 19
12. नरकातारी बाण गंगा भीष्म कुण्ड 19
13. शान्ति पर्व 21
14. गायत्री मंत्र का महत्व 31
15. पेहवा पृथूदक तीर्थ 35
16. फल्गू फरल तीर्थ 36
17. गालव तीर्थ, गुलडेहरा 37
18. सप्त सारस्वत तीर्थ 38

19. ज्योतिसर 43
20. भद्रकाली मंदिर 44
21. बाण गंगा दयलपुरा 47
22. ब्रह्म सरोवर, कुरुक्षेत्र 48
23. कुलोत्तारण तीर्थ किरमिच 52
24. सान्निहित सरोवर, कुरुक्षेत्र 55
25. लोमश तीर्थ, लोहारमाजरा 58
26. सोम तीर्थ, सैंसा 59
27. ब्रह्मतीर्थ ब्रह्मस्थान, थाणा 61
28. भूरिश्रवा तीर्थ और सैयदा 64
29. शुक्र तीर्थ, सतौड़ा 66
30. द्वितीय सर्ग 68

43
44
47
48
52
55
58
59
61
64
66
68

कुरुक्षेत्र का इतिहास

कुरुक्षेत्र गमिष्यामि कुरुक्षेत्रे वासाम्यहम्।
इत्येवं वाचुमुत्सृज्य सर्व पापैः प्रमुच्यते॥
पांशवोऽपि कुरुक्षेत्रे वायुना समुदीरिताः।
महादुष्कृत कर्माण प्रयान्ति परमंपदम॥

मैं कुरुक्षेत्र जाऊँगा और मैं कुरुक्षेत्र में रहूँगा। इतना कहने से ही मनुष्य के सब प्रकार के पाप नष्ट हो जाते हैं। कुरुक्षेत्र में वहाँ की धूल भी किसी महापापी के शरीर पर पड़ जाए तो उसे परम पद की प्राप्ति होती है।

कुरुक्षेत्र में तीर्थों की गिनती तीन सौ साठ है परन्तु सब तीर्थों को ज्ञात करना बड़ा मुश्किल काम है। फिर भी आधुनिक और पौराणिक दृष्टि से यहाँ पर पाये जाने वाले कुछ तीर्थों का विवरण इस पुस्तक में दिया जा रहा है।

लेखक

नारायणं नमस्कृत्यं नरैचैव नरोतमम्।
देवी सरस्वती व्यासं ततो जयमुदीरयेत॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः।
श्री साम्बशिवायः नमः श्री सरस्वत्यैनमः
तीर्थेस्तरन्ति प्रवतों महीरिति,
यत्रकृतः सुकृतो येन यन्ति।
अत्राद्‌द्युर्य 'जमजाय लोकं,
दिशो भूतानि यदकल्पयन्त॥ (अथर्ववेद)
अज्ञानेनापि यस्येह तीर्थयात्रादिकं भवेत।
सर्वकाम समृद्धः स स्वर्गलोके महीयते॥

तीर्थ शब्द दो अक्षरों ती और र्थ से मिलकर बना है। ती का अर्थ तीन और र्थ का अर्थ । अर्थात् जिससे तीन अर्थों की प्राप्ति हो उसे तीर्थ कहते हैं।

यहाँ अर्थ का तात्पर्य पदार्थ से है। यह तीन पदार्थ हैं- धर्म, काम और मोक्ष। इन तीनों की प्राप्ति तीर्थ यात्रा से होती हैं। इस प्रकार तीर्थ शब्द अर्थ हुआ पवित्र करने वाला।

भारत में जितने भी तीर्थ हैं वे प्रायः भगवान और भक्तों के मिलन के तीर्थ हैं। तीर्थ यात्रा का असली उद्देश्य आत्मा का उद्धार है जो सत्सँग तथा भगवत् भजन से ही हो सकता है। मनुष्य जीवन का एकमात्र उद्देश्य भगवत् प्राप्ति या भगवत प्रेम को प्राप्त करना है। इस संसार में भगवान को छोड़कर सब नश्वर है। मनुष्य को चाहिए कि इन नश्वर वस्तुओं से प्रेम न करके भगवान के चरणों में वह अपना मन लगाए। यह बात इतनी आसान नहीं है। कहने और करने

में बड़ा अन्तर है। इसको व्यवहार में उतारने के लिए भगवत् प्रेमी महात्माओं का संग करना आवश्यक है। महात्माओं का संग केवल तीर्थ स्थानों में मिल सकता है। इसी कारण शास्त्रों में तीर्थ यात्रा को बहुत अधिक महत्व प्रदान किया गया है तथा तीर्थों में जाकर सरोवरों और नदियों में स्नान करने और पवित्र वातावरण में विचार करने की आज्ञा प्रदान की गई है।

तत्समात् तीर्थेषु गन्तव्यं नरे संसार भीरुभिः

इस संसार में डरे हुए मनुष्यों को तीर्थों में जाना चाहिए।

तीर्थ तीन प्रकार के कहे गए हैं। 1 जंगम तीर्थ 2 मानस तीर्थ 3 स्थावर तीर्थ

स्थावर तीर्थ के अन्तर्गत संसार के वे असंख्य पवित्र स्थान, सागर, नदियाँ, जलाशय, सरोवर और कुँए आते हैं जो पौराणिक आधार पर अथवा भगवान की लीलाओं से संबंधित होते हैं।

इन तीर्थों में कुरुक्षेत्र पुण्यदायक और पवित्र तीर्थ माना जाता है।

कुरुक्षेत्र महापुण्यं सर्व तीर्थों निषेविद्म्

वामन पुराण के अन्तर्गत सरोमहात्म नामक शीर्षक में लिखा है

अपवित्र पवित्रो वा सर्वावस्थां पातोऽपि वा।
यःसमरेत कुरुक्षेत्रं स बाह्याभ्यन्तरः शुचि॥

अपवित्र या पवित्र अथवा सर्वावस्था प्राप्त भी जो आदमी कुरुक्षेत्र का स्मरण करता है वह बाहर और भीतर से पवित्र हो जाता है।

कुरुक्षेत्र गमिष्यामि कुरुक्षेत्रे वासाम्यहम्।
इत्येवं वाचमुत्सृज्य सर्व पापैः प्रमुच्यते॥
पांशवोऽपि कुरुक्षेत्रे वायुना समुदीरिताः।
महादुष्कृत कर्माण प्रयन्ति परमंपदम॥

मैं कुरुक्षेत्र जाऊँगा। मैं कुरुक्षेत्र में रहूँगा। इतना कहने से ही मनुष्य के सब प्रकार के पाप नष्ट हो जाते हैं। कुरुक्षेत्र में वहाँ की धूल भी किसी महापापी के शरीर पर पड़ जाए तो उसे परमपद की प्राप्ति होती है।

प्राचीन समय में कुरुक्षेत्र कोई शहर या सरोवर न होकर केवल भू क्षेत्र था। इसका विस्तार उत्तर-पूर्व में यमुना व सरस्वती नदी तक पश्चिम में पटियाला तक, तथा दक्षिण में वर्तमान पानीपत व जींद तक था।

कहा जाता है कि कौरवों और पाँडवों के पूर्वज महाराज कुरु ने इस क्षेत्र को आध्यात्मिक ज्ञान, विज्ञान और संस्कृति का महान केन्द्र बनाया था। महाराज कुरु से पहले यह क्षेत्र ब्रह्मा की उत्तर बेदी के नाम से विख्यात था। महाराज कुरु को कुष्ट रोग होने पर उन्होंने इस भूमि पर निवास व कर्म करने से इस क्षेत्र का नाम कुरुक्षेत्र पड़ा।

वैसे तो कुरुक्षेत्र में 360 तीर्थ आते हैं परन्तु इसमें से अनेक तीर्थ ऐसे हैं जिनका पता लगाना एक कठिन कार्य है। फ़िर भी पौराणिक और आधुनिक दृष्टि से यहाँ पर पाए जाने वाले कुछ तीर्थों का विवरण क्रमशः आगे दिया जा रहा है।

कुरुक्षेत्र

कुरुक्षेत्र दिल्ली से उत्तर की तरफ 260 किमी० व करनाल से 39 किमी० तथा अम्बाला से दक्षिण की ओर 40 किमी० की दूरी पर स्थित है। यह दिल्ली से अम्बाला जाने वाले मुख्य रेल लाइन पर एक प्रमुख रेलवे स्टेशन है। यह राष्ट्रीय राजमार्ग पर नं० 1 पर पिपली से लगभग पाँच किमी० की दूरी पर स्थित है। कुरुक्षेत्र की आबादी थानेसर कस्बे में बसी हुई है जो रेलवे स्टेशन से लगभग तीन किमी० है। यहाँ पर देश के विभिन्न भागों से प्रति वर्ष असंख्य तीर्थ यात्री दर्शनों हेतु आते रहते हैं।

महाभारत का युद्ध क्षेत्र और गीता की जन्म स्थली कुरुक्षेत्र की पावन भूमि 128 किमी० क्षेत्रफल में फैली हुई है। यहाँ पर महाभारत युद्ध कालीन अनेक पवित्र स्थल, मंदिर, और सरोवर हैं। इसकी परिधी में वर्तमान काल का पानीपत जींद का उत्तर पश्चिमी क्षेत्र और पटियाला जिला का पूर्वी क्षेत्र आता है। इसके उत्तर में सरस्वती और दृषद्वही पवित्र नदियों के मध्यवर्ती क्षेत्र को ब्रह्मावर्त कहा जाता है।

कुरुक्षेत्र को धर्म क्षेत्र भी कहा जाता है जो न्याय प्रियता का द्योतक है। कुरुक्षेत्र को सृष्टि के सर्जक ब्रह्माजी के नाम पर ब्रह्मक्षेत्र भी कहा जाता है। कुरुक्षेत्र का अन्य नाम नारदक भी है जो शायद निर्दुख (चिंता रहित) से लिया गया है।

ऋगवेद में सरस्वती का वर्णन आता है। कुरुक्षेत्र ऋषि व्यास की जन्मस्थली भी रही है। जो वेदों और पुराणों के पौराणिक

रचियता माने जाते हैं। उस शताब्दी में एक ऐसी सभ्यता का उदय हुआ जिसका इतिहास विश्व में सबसे लम्बा माना गया है जिसने मिश्र, सुमेर, बेबीलोन, अकाद और असीरिया जैसी समृद्ध सभ्यताओं को मात दी, जो कि अब लुप्त प्राय: हो गई है।

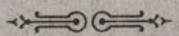

प्रमुख तीर्थों के नाम

(1) ब्रह्मसर या कुरुक्षेत्र सरोवर (2) सन्निहित सरोवर (3) स्थाणेश्वर (स्थाणुव्रत) (4) पेहोवा (पृथूदक) (5) कैथल (कपिस्थल), (6) फरल (फल्गु) (7) पुण्डरी (पुण्डरीक) (8) पिण्डारा (पिण्डतारक) (9) राम राय (रामह्रद) (10) कलायत (11) सफीदों (सर्पदेवी) तथा इसके अतिरिक्त बहुत से ग्रामों में महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल हैं। क्रमांक 8 से 11 तक के तीर्थ जिला जींद में हैं।

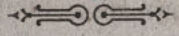

कुरुक्षेत्र में सूर्यग्रहण का महत्व

प्राचीन समय से सूर्यग्रहण पर देश के कौने-कौने से साधु-महात्मा, मठाधीश, सामाजिक कार्यकर्त्ता, राजनीतिज्ञ, धार्मिक नेता, बच्चे, जवान, बूढ़े, स्त्री-पुरुष, अमीर-गरीब, कुरुक्षेत्र की इस पवित्र भूमि पर आकर तीर्थों में स्नान करके प्राचीन मंदिरों, गुरुद्वारों तथा मठों में जाकर पूजा-अर्चना करके धर्म लाभ कमाते हैं। सूर्य-ग्रहण

के अवसर पर सभी धर्मों के धार्मिक नेता अपने अपने धर्मों का प्रचार करते हैं। श्रीमद्भागवत् के दसवें अध्याय में वर्णन आया है कि महाभारत का युद्ध प्रारम्भ होने से पहले श्री कृष्ण और यदुवंशी द्वारिका से कुरुक्षेत्र में सूर्यग्रहण के अवसर पर आए थे।

यहँ भी वर्णन आया है कि भगवान श्री कृष्ण सूर्य ग्रहण पर ब्रज की व्याकुल गोपियों से यहाँ के पवित्र तीर्थों पर मिले थे। पुराणों में यह भी उल्लेख आया है कि श्री कृष्ण के बड़े भाई बलराम भी सूर्य ग्रहण के समय कुरुक्षेत्र के पवित्र तीर्थों के दर्शन करने और ब्रह्मसर में स्नान करने के लिए पधारे थे।

सातवीं शताब्दी में थानेसर (कुरुक्षेत्र) महाराजा हर्ष की राजधानी होने के कारण महाराज हर्ष विभिन्न अवसरों पर यात्रियों का विशेष ध्यान रखते थे। सूर्य ग्रहण के अवसर पर सिक्खों के कई गुरु धर्म प्रचार हेतु यहाँ पर पधारते थे। गुरु नानक देव, गुरु अमरदास, गुरु हरराय, गुरु तेग बहादुर और दशम गुरु गोविन्द सिंह जी की माता गुजरी और धर्म पत्नि सुन्दरी सूर्य ग्रहण के अवसर पर यहाँ पधारे थे। उन्होंने यहाँ के पवित्र सरोवर में स्नान और पूजा पाठ किया तथा जप व ध्यान किया।

श्रद्धालुजन सरोवरों में स्नान, पूजा पाठ और जप करने के पश्चात श्रद्धा के साथ दान देते हैं। पुराणों में उल्लेख मिलता है कि सूर्य ग्रहण के अवसर पर जप, तप, दान और हवन कराने का बहुत फल मिलता है। महाभारत में सूर्य ग्रहण को "कुल तारण" पर्व कहा गया हैं।

सूर्य ग्रहण के अवसर पर स्नान करने और दान देने से पिछले कुलों का उद्धार हो जाता है। मत्स्य पुराण के अनुसार सूर्य ग्रहण के

अवसर पर कुरुक्षेत्र में रहना महापुण्यदायी माना गया है। इस अवसर पर कुरुक्षेत्र के तीर्थों में स्नान करने पर हजारों अश्वमेघ यज्ञों का फल मिलता है। वायु पुराण के अनुसार कुरुक्षेत्र में सूर्य ग्रहण के अवसर पर दान करने से उत्तरोत्तर तेरह दिन तक तेरह गुणा बढ़ता है। पुराणों में इस बात का भी उल्लेख आया है कि सूर्य ग्रहण और सोमवती अमावस्या के अवसर पर कुरुक्षेत्र के सरोवरों पर सभी देवी-देवताओं का आगमन होता है।

महाभारत के वन पर्व में उल्लेख है कि जो प्राणी यह कहता है कि मैं कुरुक्षेत्र जाऊँगा और मैं वहाँ निवास करूँगा, वह कुरुक्षेत्र से चाहे हजारों किमी० दूर बैठा हो वह सब पापों से मुक्त हो जाता है। अर्थात् कुरुक्षेत्र का नाम स्मरण करने मात्र से ही उसके सब पाप नष्ट हो जाते हैं।

गंगायाः जले मुक्ति वासस्यावः जले स्थले।

स्कन्ध पुराण के अनुसार कुरुक्षेत्र में दान करने से मनुष्य आवागमन से मुक्त हो जाता है। इस प्रकार कुरुक्षेत्र में स्नान करने और दान देने से महापुण्यदायी फल प्राप्त होता है।

ब्रह्मसरोवर के आसपास के मंदिर सर्वेश्वर महादेव मंदिर- यह मंदिर ब्रह्मसरोवर के मध्य में स्थित है। इस मंदिर का निर्माण महन्त श्रवणनाथ जी ने 19वीं शताब्दी में कराया था। इस मंदिर के सामने एक पुल बना हुआ है। जिस पर से होकर मंदिर में जाया जा सकता है।

चन्द्रकूप- यह कूप ब्रह्म सरोवर के बड़े द्वीप पर बना हुआ है। इसकी गिनती प्राचीन पवित्र कुँओं में की जाती है। एक किवदन्ती हैं कि सूर्य ग्रहण के समय पर इस कूप का पानी दूध बन जाता था।

इस कूप के समीप ही एक मंदिर है। इस मंदिर के पास महाभारत युद्ध के बाद युधिष्ठिर ने एक विजय स्तम्भ का निर्माण कराया था। अब यह विजय स्तम्भ काल के गाल में समा गया है। बाद में इसी कूप को सिक्कों से भरवाकर औरंगजेब ने इस कुँए पर एक किला बनवाया था। बाद में मराठों ने इस किलें को नष्ट करके इस तीर्थ का जीर्णोंधार कराया था।

कौरव पाँडव हवेली- ब्रह्म सरोवर के मुख्य द्वार पर कौरव पाँडव हवेली एक किले के रूप में स्थित है। यह हवेली बाबा श्रवणनाथ द्वारा बनवाई गई थी। इस हवेली में पाँचों पाण्डवों, कौरवों, भगवान श्री कृष्ण, भीष्मपितामह, लक्ष्मीनारायण और भगवती की मूर्तियाँ बनी हुई हैं। इस हवेली के निकट जगन्नाथ मंदिर, गुरु गोरखनाथ मंदिर तथा प्राचीन हनुमान मंदिर हैं।

गीता भवन- इस मंदिर का निर्माण 1921-1922 में रीवा नरेश द्वारा कराया गया था। यह ब्रह्म सरोवर के उत्तरी दिशा में है। इस मंदिर में भगवान श्रीकृष्ण, शिवजी और माता दुर्गा की भव्य मूर्तियाँ स्थापित हैं। गीता भवन का संचालन कुरुक्षेत्र जीर्णोद्धार समिति द्वारा किया जाता है। इस भवन में एक पुस्तकालय भी है। इस पुस्तकालय में धार्मिक पुस्तकों का भण्डार है।

नाभि कमल- ऐसी मान्यता है कि यहाँ भगवान विष्णु की नाभि पर कमल प्रस्फुटित हुआ था और उसी कमल से ब्रह्माजी की उत्पत्ति हुई थी। यह पवित्र सरोवर थानेसर कस्बे के समीप है। यहाँ पर चैत्र मास में तीर्थ यात्री आते हैं।

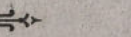

ब्रह्मसुर या कुरुक्षेत्र सरोवर

यह सरोवर तीर्थ यात्रियों का मुख्य आकर्षण केन्द्र है। यह सरोवर 1311 मीटर लम्बा और 640 मी० चौड़ा है। इसी स्थान पर ब्रह्माजी ने अपना पहला यज्ञ किया था। कहा जाता है कि इस सरोवर का निर्माण महाराजा कुरु ने करवाया था। यह सरोवर बहुत ही पवित्र माना जाता है। इसके उत्तरी-पश्चिमी घाट अच्छी हालत में हैं। इस द्वीप समूह पर अनेक मंदिर और ऐतिहासिक महत्व के स्थान हैं। छोटे द्वीपों और श्रवण नाथ मठ को एक पुल से जोड़ा हुआ है। बड़े द्वीप को एक दूसरे सेतु द्वारा जोड़ा गया है। यह सरोवर के उत्तरी किनारे के मध्य से शुरू होकर सरोवर के मध्य से होता हुआ दक्षिणी किनारे तक जाता है। यह पुल सरोवर को दो भागों में विभाजित करता है। बड़े द्वीप पर कुछ अवशेष मिलते हैं। कुछ का मत है कि ये अवशेष औरंगजेब द्वारा निर्मित एक किले के हैं। औरंगजेब ने हिन्दुओं पर जजिया कर के अतिरिक्त इस सरोवर से पवित्र जल ले जाने वाले तथा सरोवर में स्नान करने वाले तीर्थ यात्रियों से कर लेने के लिए अपने सिपाहियों को नियुक्त कर रखा था।

सरोवर के उत्तरी किनारे पर मठ, धर्मशालाएँ और अनेक मंदिर हैं। सरोवर के उत्तर पूर्वी किनारे पर बाबा कमली वाले की धर्मशाला और उत्तर पश्चिमी किनारे पर बिरला गीता मंदिर विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। उत्तर किनारे के मध्य में व्यास मठ गीता भवन है। इस सरोवर के उत्तर पश्चिमी किनारे पर सिक्खों का पवित्र स्थान है। इसका सम्बन्ध गुरु गोविन्द सिंह जी से है। वे सूर्य ग्रहण के समय कुरुक्षेत्र में आए थे।

सन्निहित सरोवर

यह सरोवर ब्रह्मसरोवर से छोटा है। यह 457 मी० लम्बा और 157 मी० चौड़ा है। यहाँ के ध्रुव नारायण और श्री लक्ष्मी नारायण के मंदिर बहुत प्रसिद्ध हैं। इस सरोवर के तीन तरफ घाट हैं। यह सरोवर कुरुक्षेत्र रेलवे स्टेशन से 1 किमी० दूर पिहोवा सड़क पर स्थित है। सूर्य ग्रहण के अवसर पर सबसे पहले तीर्थ यात्री इसी सरोवर पर आते हैं। सन्निहित का अर्थ है- सभी तीर्थों का मिलन। ऐसी मान्यता है कि प्रत्येक अमावस्या विशेष रूप से सोमवती अमावस्या पर सभी देवी-देवता और समस्त तीर्थ यहाँ पर निवास करते हैं। सूर्य ग्रहण के अवसर पर यहाँ श्राद्ध करना हजारों अश्वमेघ यज्ञों के बराबर है।

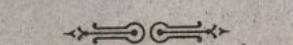

स्थाण्वीश्वर सरोवर

यह सरोवर थानेसर कस्बे से थोड़ी दूर पर स्थित है। विद्वानों का मत है कि स्थाण्वीश्वर सरोवर के नाम पर ही कस्बे का नाम थानेसर पड़ा। इस सरोवर पर भगवान शंकर का मनोहारी मंदिर है। कहते हैं कि भगवान कृष्ण के कहने पर पाण्डु पुत्र अर्जुन ने महाभारत का युद्ध प्रारम्भ होने से पहले इसी सरोवर पर भगवान शिव की अराधना की थी। वामन पुराण के अनुसार इसी तीर्थ पर स्नान करने से राजा वेन का कुष्ट रोग जाता रहा था। इस सरोवर पर

कालेश्वर महादेव का मंदिर भी था जो अब जीर्ण-शीर्ण अवस्था में है।

महाभारत में स्थाण्वीश्वर सरोवर को तीर्थ स्थल के रूप में माना गया है। कहते हैं कि स्वयं भगवान शिव ने इस तीर्थ स्थल को स्थापित किया था। पुराणों में भी इस स्थल को तीर्थ स्थल कहा गया है। पुराणों में वर्णन आया है कि यहाँ पर स्थित स्थाणुवर के दर्शन करने से ही मनुष्य के सभी पाप नष्ट हो जाते हैं। यह भी कहा जाता है कि मध्यमान में समुद्र, नदियाँ और सभी सरोवर आदि स्थाणु तीर्थ में आ जाते हैं। जो आदमी यहाँ पर भगवान स्थाणु को मन, वचन, कर्म से स्मरण करता है उसके सभी पाप नष्ट हो जाते हैं। इस तीर्थ का सँचालन श्री अखाड़ा पंचायती महानिर्वाणी संस्था करती है। शिव रात्रि के अवसर पर यहाँ बहुत बड़ा मेला लगता है।

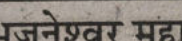

श्री दुःख भजनेश्वर महादेव मंदिर

भजनेश्वर महादेव मंदिर सन्निहित सरोवर की पूर्व दिशा में है। यह बहुत छोटा परन्तु आकर्षक मंदिर है। यहाँ पर प्रति दिन सत्संग होता है। इस मंदिर में शिवलिंग बना हुआ है। श्रावण व कार्तिक के महीनों में भगवान शिव का पूजन, अभिषेक करना और व्रत रखना महापुण्यदायक है। शिव के भक्तों का मानना है कि यहाँ भगवान शिव की आराधना करने से सभी भौतिक दुःखों का निवारण हो जाता है। मंदिर में प्रतिदिन प्रातः सायं भगवान शिव

की आरती होती है। मंदिर के पास ही श्री कृष्ण धाम तथा काली मंदिर दर्शनीय स्थल है।

शेखचिल्ली का मकबरा

थानेसर कस्बे के पास ही शेखचिल्ली का मकबरा है। इस मकबरे को मुगलबादशाह शाहजहाँ ने बनवाया था। इस मकबरे को देखने से मुगलकानीन स्थापत्य कला के दर्शन होते हैं। इस मकबरे में राजा हर्षवर्धन की स्मृति में सुन्दर पार्क भी बना हुआ है। थानेसर राजा हर्षवर्धन की राजधानी रही थी।

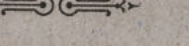

गुरुद्वारा छटी पातशाही

सन्निहित सरोवर के पास पेहावा मार्ग पर कुरुक्षेत्र रेलवे स्टेशन से एक किमी० की दूरी पर गुरुद्वारा छटी पातशाही बना हुआ है। सिक्खों के षष्टम् गुरु हरगोविन्द सिंह कुरुक्षेत्र में पधारे थे। तब उन्होंने इस स्थान पर गुरुद्वारे का निर्माण कराया था। बाद में सूर्य ग्रहण के अवसर पर सिक्खों के कई गुरु यहाँ पर आए थे। सिक्ख धर्म के संस्थापक एवं प्रवर्तक श्री गुरुनानक देव भी सर्वप्रथम यहाँ पर पधारे थे। जिस स्थान पर गुरुनानक देव कुरुक्षेत्र में रुके थे, आज वहाँ उनकी यादगार में गुरुद्वारा सिद्ध वटी नाम से बनाया गया है।

यह ब्रह्मसरोवर के दक्षिण में स्थित है।

गुरु हरगोविन्द राय और गुरु तेग बहादुर भी सूर्य ग्रहण के समय कुरुक्षेत्र में आए थे। वे स्थाण्वीश्वर तीर्थ के पास ठहरे थे। वह जिस स्थान पर वे ठहरे थे उस जगह पर उनकी याद में गुरुद्वारा बनवाया गया था। इस गुरुद्वारे को देखकर सिक्खों के नवम् गुरु का स्मरण हो आता है। ब्रह्म सरोवर की पश्चिमी दिशा में दशम गुरु हरगोविन्द सिंह जी की माता जी श्री गुजरी तथा पत्नि सुंदरी के सूर्य ग्रहण के अवसर पर यहाँ पधारने का प्रतीक है।

बिरला मंदिर, गीता भवन

कौरव-पाण्डव हवेली के निकट ही गीता मंदिर स्थापित है। इस मंदिर को सेठ जुगल किशोर बिरला ने बनवाया था। इस मंदिर के दो नाम हैं। 1 बिरला मंदिर, 2 गीता मंदिर। इस मंदिर के अंदर श्री कृष्ण की और अर्जुन की मूर्तियाँ हैं। श्रीकृष्ण अर्जुन को गीता का उपदेश देते हुए दिखाए गए हैं। मंदिर के बाहरी भाग में गरुड़ नारायण की अत्यन्त सुन्दर मूर्ति स्थापित है। इस मंदिर में सँगमरमर का रथ भी बना हुआ है जिसमें सँगमरमर के चार घोड़े जुते हुए हैं। यह रथ महाभारत के युद्ध की याद को ताजा कर देता है। इस मंदिर में प्रतिवर्ष श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व पर बहुत बड़ा भारी मेला भरता है। मंदिर के मुख्य द्वार पर हनुमान जी का मंदिर बना हुआ है।

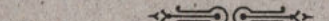

श्री जयराम आश्रम

ब्रह्मसरोवर के उत्तरी दिशा में श्री जयराम आश्रम स्थित है। इस आश्रम को सन् 1973 में ब्रह्मचारी देवेन्द्र स्वरूप ने बनवाया था। इस आश्रम में चारों पद प्रतिष्ठित हैं। इस आश्रम में एक मंदिर भी है जिसमें विभिन्न देवी देवताओं की मूर्तियाँ स्थापित हैं। ब्रह्मचारी देवेन्द्र स्वरूप जी ने इस आश्रम में संस्कृत एवं वेदों की शिक्षा का उचित प्रबन्ध किया है। आश्रम का मुख्य द्वार ब्रह्मसरोवर के किनारे पर यात्रियों को आकर्षित करता है।

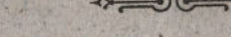

नरकातारी बाण गंगा भीष्म कुण्ड

ॐ कुरुक्षेत्र गया गंगा प्रभापुसश्काराणिच।
तीर्थलेयतानी स्थान काले भवन्तोहः॥

यह पवित्र सरोवर कुरुक्षेत्र से ज्योतिसर को जाने पर रास्तें में 5 किमी० की दूरी पर पड़ता है। महाभारत में वर्णन आया है कि युद्ध में घायल हो जाने पर भीष्म पितामह बाणशय्या पर पड़े थे। प्यास लगने पर उन्होंने अर्जुन से पानी माँगा था। अर्जुन ने पृथ्वी को अपने तीर से भेद कर गंगा को प्रकट किया था। इस गंगा का नाम बाण गंगा पड़ा।

महाभारत के युद्ध के दसवें दिन भगवान श्रीकृष्ण ने पितामह से पूछा था कि आपकी मृत्यु कैसे होगी? तब भीष्म पितामह ने श्रीकृष्ण पर प्रसन्न होकर बताया था कि यदि शिखण्डी के नेतृत्व में

उसे आगे करके सारे राजा मेरे ऊपर एक साथ आक्रमण करें तभ मैं मृत्यु को प्राप्त हो सकता हूँ। इस प्रकार युद्ध में शिखण्डी क देखकर भीष्म पितामह ने तीर चलाना छोड़ दिया और युद्ध घायल होकर तीरों की शय्या पर गिर पड़े। उनका समस्त शरीर त बाणों पर टिका था परन्तु सिर के नीचे बाण ने होने पर वह नीचे क लटक गया था। भीष्म पितामह ने सिर के लिए तकिए की माँग क तो अर्जुन ने सिर के नीचे तीन बाणों का तकिया बना दिया। इसके बाद उनके पास कौरव और पाण्डव एकत्र हो गए।

भीष्म पितामह के पिताश्री का नाम शांतनु व माता का नाम गंगा भागीरथी था। उन्हें पिताश्री से वरदान प्राप्त था कि उनकी मृत्यु उनकी इच्छानुसार होगी। युद्ध समाप्त होने पर पाण्डव हस्तिनापुर चले गए। इसके बाद 1 माह 26 दिन बाद पाण्डव द्रौपदी और भगवान श्रीकृष्ण के साथ कुरुक्षेत्र में पितामह के पास पधारें। भीष्म पितामह समस्त पुराणों के ज्ञाता थे। उन्होंने पाण्डवों को शांति पर्व तथा विष्णु सहस्त्रनाम सुनाया।

उन्होंने वरदान दिया कि अनजाने में कोई व्यक्ति पाप का अन्न खा ले और उसकी बुद्धि इतनी मलिन हो जाए कि वह धर्म की सोच भी न सके तो इस कुण्ड में स्नान करने के वह पाप मुक्त हो जाएगा और उसका मन निर्मल हो जाएगा।

इस तीर्थ में भीष्म पितामह, पाँचों पाण्डव, सीता-राम, गंगा महादेव, पँचमुखी हनुमान और अष्टमुखी दुर्गा जी की मूर्तियाँ दर्शनीय हैं। हनुमान की जी 26 फुट ऊँची मूर्ति भी दर्शनीय है।

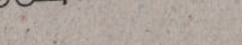

शान्ति पर्व

भीष्म द्वारा भगवान श्रीकृष्ण की स्तुति

शरतल्पे शयानस्त भारतानां पितामहः।
कथमुन्सष्टवान् देहं कंच योगधारयत॥

जनमेजय ने वैशम्पायन से पूछा- बाणशय्या पर सोए हुए भीष्म पितामह ने अपने शरीर का त्याग किस प्रकार किया था और उन्होंने उस समय किस योग को धारण किया था?

वैशम्पायन उवाच

श्रृणष्वावहिता राजन्शुचिर्भत्या समाहितः।
भीष्मस्य कुरुशार्दल देहोत्सर्ग महात्मन॥

वैशम्पायन जी कहते हैं- हे राजन! तुम सावधान पवित्र और एकाग्रचित होकर महात्मा भीष्म के देहत्याग का वृतान्त सुनो-

शुक्लपक्षस्य चाष्टाया माघमास्य पार्थिव।
प्राज्ञापत्ये न नक्षत्र मध्यं प्राप्ते दिवारे॥
निवृत्तामावे त्वयन उतरे वै दिवाकरे।
समावेशयदात्मात्मन्यैव समाहित॥

हे राजन! जब सूर्य दक्षिणायन से उत्तरायण में आ गए, तब माघ मास की शुक्ल पक्ष की अष्टमी तिथि को रोहिणी नक्षत्र में दोपहर के समय भीष्म पितामह ने ध्यानमग्न होकर अपने मन को परमात्मा में लीन कर लिया।

विकिर्णाशुरिवादित्यो भीष्म शरशतैश्रितः।
शुशुभे परया लक्ष्म्यो वृतो ब्राह्मणसत्तमैः॥

चारों तरफ अपनी किरणें बिखेरने वाले सूर्य की तरह सैकड़ों बाणों से बिंधे हुए भीष्म पितामह उत्तम शोभा से सुशोभित होने लगे। अनेक श्रेष्ठ ब्राह्मण उन्हें घेर कर बैठे थे।

त्यासेन वनविदुषा नारदे न सुरर्षिणा।
देवस्थातेन वात्स्येन तथा श्मक सुमन्तना॥
तथा जैमिनिनाचैव पैलेन च महात्मना।
शांडिल्यदेवलाभ्यां च मैत्रेयेण च धीमता॥
असितेन वसिष्ठन कौशिके न महात्मना।
हारीतलोमशभ्यां च तथाऽऽत्रणे च धीमता॥
बृहस्पतिश्र शुक्रश्र च्वयनश्र महामुनिः।
सनत्कुमार कपिलो बाल्मीकिस्तुम्बरः करु॥
मौदग्ल्यो भार्गवो रामस्तृणाबिन्दुर्महामुनिः।
पिप्लादोऽथ वायुश्र सवतृः पुलह् कचः॥
कास्यपश्र पुलस्त्यश्र ऋतुर्दक्ष पराशरः।
मरोचिरगिंरा कश्यो गौतमो गालवोमुनिः॥
धोम्यो विभाण्डो मांडत्योधौम कृष्णानु भोतिकः।
उलूकः परहो विप्रो मार्कडण्यो महामुनिः॥
भास्करिः पूरणः कृष्णाः सूत परमधार्मिकः।
एतैश्रान्यैर्मुनिगणैं सर्महाभागैर्महात्मांभिः॥
श्रद्धा दशमोऽपे पेवृंमश्रान्र टव ग्रहैः।

वेदों के ज्ञाता व्यास, देवर्षि नारद, देवस्थान वात्स्य, अश्मक, सुमन्त, जैमिनी, शांडिल्य, वशिष्ठ, विश्वामित्र, हारित, लोमश, दत्तात्रेय, बृहस्पति, शुक्र, महामुनिच्यवन ऋषि, सनतकुमार, कपिल,

बाल्मीकि, तुम्बरू: गुरु मौदगल्य, भृंगुवंशी परशुराम, महामुनि तृणबिन्दु, पिप्लाद, वायुतवत, पुलह, कच, कश्यप, पुलत्स्य, कृत, दक्ष, पराशर, मरीचि, अगिरा, कश्यप, गौतम, गाल्वमुनि, धौम्य, दियाण्ड, मांडत्य, धौम्र कृष्णानु, भौतिक, श्रेष्ठ ब्राह्मण उलूक, महामुनि मार्कण्डेय, भास्कर, पूरण कृष्ण, परम धार्मिक रुत तथा अन्य बहुत से सौभाग्यशाली महात्मा मुनि श्रद्धा, शम, दम आदि गुणों से सम्पन्न थे, भीष्म को घेरे हुए थे। इन ऋषियों के मध्य में भीष्मजी ग्रहों से घिरे हुए चन्द्रमा के समान शोभायमान हो रहे थे।

भीष्म बहुत ही कर्मयोगी और ज्ञानी पुरुष थे। उन्होंने धर्मराज युधिष्ठिर के राजसूय-यज्ञ में धैर्यपूर्वक कर्मयोग के उपदोश श्रीकृष्ण की अग्रपूजा का समर्थन किया था। महाभारत के युद्ध में भगवान कृष्ण ने शस्त्र ग्रहण न करने की प्रतिज्ञा कर सरथ्य में प्रवृत हुए थे। अपनी भक्तवत्सलता के कारण ही वे अपने सखा व भक्त अर्जुन का रथ हाँकने का काम कर रहे थे। युद्ध के मैदान में एक दिन भीष्म पितमाह ने यह प्रतिज्ञा कर ली कि आज मैं श्री कृष्ण को शस्त्र ग्रहण करवा कर ही रहूँगा। भीष्म की उक्त प्रतिज्ञा का मार्मिक चित्र सूरदास जी के पद में देखिए-

आजु जो हरिहिं न शस्त्र गहाउं।
तौं लाजौ गंगाजननी को जो शांतनु सुत न कहाउं॥
स्यानन्द खड़ि महारथ खड़ौ कपिध्वज सहित डुलाउं।
इतो न करौ सपथ मोहि हरि को, क्षत्रिय गतिहिं न पाउं॥
पाण्डव दल सन्मुख है धाऊ सरिता रुधिर बहाउं।
सूरदास रन भूमि विजय बिन जियत न पीठ दिखाउं॥

इसके अनन्तर भीष्म का पराक्रम और अर्जुन का साधारण संग्राम देखकर शत्रुओं का विनाश करने वाले वीर महापराक्रमी भगवान कृष्ण को चिंता सताने लगी कि भीष्म जो दोनों सेनाओं के बीच प्रचण्ड तेज से युक्त सूर्य के समान हैं, अपने बाणों से पाण्डव सेना के सामने प्रलयकाल का दृश्य उपस्थित कर रहे हैं। पाण्डवों की सेना के मुख्य सैनिकों को युद्ध में खेत होते देखकर श्रीकृष्ण सहन न कर सके। वे सोचने लगे कि इस प्रकार तो युधिष्ठिर की सेना सब किसी भी भाँति भीष्म पितामह के सामने नहीं ठहर सकती।

भीष्म एक ही दिन के युद्ध में सम्पूर्ण देवताओं, दानवों और दैत्यों का नाश कर देते हैं। इस प्रकार तो भीष्म सेना सहित युद्ध में पाण्डवों और उनके अनुयायी राजाओं का नाश कर देंगे, इसमें जरा भी संदेह नहीं है।

भगवान कृष्ण को अपनी प्रतिज्ञा तोड़नी पड़ी। वे बार-बार सिंहनाद करते हुए, हाथ में रथ का टूटा पहिया लेकर भीष्म पितामह की ओर ऐसे दौड़ पड़े जैसे गरजता हुआ सिंह उन्नत गजराज की ओर दौड़ता है।

भगवान कृष्ण का पीताम्बर कँधे से गिर पड़ा, पृथ्वी डोलने लगी, सर्वत्र हाहाकार मच गया।

अपने योग्य मंत्र और प्रातः शाम कीर्तन करने योग्य देवताओं, ऋषियों तथा राजाओं के मंगलमय नामों का कीर्तन, महात्म्य तथा गायत्री जप का फल-

भीष्म पितामह ने सरसैय्या पर पड़े हुए कहा- राजन! महर्षि

वेदव्यास का बताया हुआ यह मंत्र एकाग्रचित होकर सुनो। सावित्री देवी ने इस दिव्य मंत्र का निर्माण किया है तथा तत्काल ही पापों से छुटकारा दिलाने वाला है। अनद्य पाण्डव श्रेष्ठ युधिष्ठिर। मैं इस मंत्र की सम्पूर्ण विधि बताता हूँ, उसे सुनकर मनुष्य के सब पाप नष्ट हो जाते हैं।

हे धर्मराज! रात दिन जो इस मंत्र का जप करता है वह पापों से लिप्त नहीं होता। वही मंत्र मैं तुम्हें बताने जा रहा हूँ। एकाग्रचित होकर तुम उसे सुनो–

हे युधिष्ठिर! जो इस मंत्र को सुनता है वह दीर्घजीवी तथा सफल मनोरथ वाला होता है। वह इस लोक और परलोक में भी सुख भोगता है।

हे राजन! प्राचीन काल में क्षत्रिय धर्म का पालन करने वाले सदा सत्यव्रत के आचरण में सँलग्न रहने वाले राजर्षि शिरोमणि इस मंत्र का सदैव जप किया करते थे।

हे युधिष्ठिर। जो राजा अपने मन और इँद्रियों को वश में करके शांतिपूर्वक प्रतिदिन इस मंत्र को जपता है उसे सर्वोत्तम शक्ति प्राप्त होती है। मंत्र इस प्रकार है–

महान व्रतधारी वशिष्ठ को नमस्कार है, वेदानिधि पराशर को नमस्कार है, विशाल स्पर्शधारी अनन्त अक्षय सिद्ध गुण को नमस्कार है, एक सहस्त्र मस्तक वाले शिव को नमस्कार है, ऋषिवृन्द को नमस्कार है तथा परात्पर, देवाधिदेव वरदाता परमेश्वर को नमस्कार है, सहस्त्र नाम धारण करने वाले भगवान जनार्दन को नमस्कार है।

अजैकवाद, अहिर्बुध्न्य, पिनाकी, अपराजित ऋत, पित्रुरूप-त्रयम्बक, महेश्वर वृषाकाय शम्भु, हवन और ईश्वर ये ग्यारह रुद्र विख्यात हैं, जो तीनों लोकों के स्वामी हैं।

वेद के शतरूपीय प्रकरण के महात्मा रुद्र के सैकड़ों नाम बताए गए हैं। विष्णु, इन्द्र, पूषा, त्वष्टा, भास्कर, जयन्त, अर्यमा, धाता, अंश, भग, मित्र, जलेश्वर, और वरुण आदित्य कहलाते हैं। ये सब कश्यप के पुत्र हैं।

प्रभास, अनल, प्रत्यूष, अनिल, धर, सोम, ध्रुव और सावित्र आठ वसु हैं। नासत्य और दस्त्र ये दोनों अश्वनी कुमार के नाम से जाने जाते हैं। ये अश्वरूप धारिणी संज्ञा देवी की नाक से प्रकट हुए थे। इस प्रकार ये सब मिलकर 33 देवता हैं।

भीष्म पितामह बोले- हे धर्मराज! अब मैं संसार के कर्म पर दृष्टि रखने वाले तथा यज्ञ, दान, और सुवृत को जानने वाले देवताओं का परिचय देता हूँ। ये समस्त देवगण स्वयं अदृश्य रहकर सब प्राणियों के शुभाशुभ कर्मों को देखते रहते हैं। इनके नाम निम्न हैं- विश्वेदेवा, मृत्यु, काल और पितृगण। इसके अतिरिक्त तपस्वी मुनि तथा तप एवं मोक्ष संलग्न सिद्ध महर्षि भी समस्त जगत के हित को दृष्टि में रखते हैं। ये सब अपना नाम कीर्तन करने वालों को शुभ फल देते हैं।

प्रजापति ब्रह्माजी ने जिन लोकों की रचना की है, उन सब में ये अपने दिव्य तेज से निवास करते हैं। तथा शुद्ध दृष्टि से सबके कामों का निरिक्षण करते हैं। ये सबके प्राणों के मालिक हैं। जो भी शुद्ध भाव से इनका कीर्तन करता है उसे धर्म, अर्थ काम की प्राप्ति

होती है। यह लोकनायक ब्रह्माजी के बनाए हुए मंगलमय पवित्र लोकों में जाता है।

ऊपर वर्णित 33 देवता सम्पूर्ण भूतों के स्वामी हैं। इसी तरह महाकाय, नंदीश्वर ग्रामीण वृष्भध्वज, सम्पूर्ण लोकों के स्वामी गणेश, विनायक, भूतगण, सौम्यगण, नक्षत्र, आकाश, पक्षीराज गरुड़, नदियाँ, महात्मा, स्थावर, जंगम, हिमालय, समस्त पर्वत, समस्त सागर, भगवान शंकर के तुल्य उनके पराक्रम वाले अनुचरगण, विष्णु, विष्णु देव, स्कन्द और अम्बिका, इन सब नामों का निर्मल भाव से कीर्तन करने वाले मनुष्यों के सब पाप नष्ट हो जाते हैं।

हे युधिष्ठिर! अब मैं तुम्हें श्रेष्ठ महर्षियों के नाम बता रहा हूँ। अर्वावस, रैम्य, भवक्रीत, अगिरा-नंदन, उशिज के पुत्र कक्षीवान, परावसु, बल, बर्हिषद, मेघातिथि के पुत्र कण्व ऋषि। ये सब ऋषि ब्रह्मतेज सम्पन्न और लोकस्रष्टा बतलाए गए हैं। इनका तेज रुद्र, अग्नि और वसुओं के समान है। ये सब पृथ्वी पर शुभ कर्म करके स्वर्ग में देवताओं के साथ आनन्दपूर्वक रह रहे हैं और शुभ फलों का उपयोग करते हैं।

परशुराम, लोमश, अश्वस्थामा, व्यास ये चारों दिव्य मुनि हैं। इनमें से एक-एक सात सात ऋषियों के समान है। धर्म, काम, काल, वसु, वासुकि, अनन्त और कपिल ये सात पृथ्वी को धारण करने वाले हैं। महेन्द्र के गुरु सातों महर्षि पूर्व दिशा में निवास करते हैं। जो पुरुष शुद्ध चित से इनका नाम लेते हैं वे इन्द्रलोक में प्रतिष्ठित होते हैं। अत्रि वशिष्ठ, महर्षि कश्यप, गौतम, भारद्वाज, कुशिकवंशी विश्वामित्र और ऋचीक नन्दन प्रतापवान उग्र स्वभाव

वाले जमदग्नि ये सात उत्तर दिशा में रहने वाले कुबेर के गुरु ऋत्विज हैं। दृढ़य ऋतेयु कीर्तिमान परिव्याध सूर्य के सदृश तेजस्वी एकेट, द्वित, चित तथा धर्मात्मा अत्रि के पुत्र सारस्वत मुनि ये सात वरुण के ऋत्विज हैं और पश्चिम दिशा में इनका निवास है।

उन्मुचु, प्रमुख शक्तिशाली स्वास्त्याजिय, दृढ़ष्य, ऊर्ध्वबाहु, नृणसीमा, गिरा और मित्रावरुण के पुत्र महाप्रतापी अगस्त्युमुनि ये सात धर्मराज (यम) के ऋत्विज हैं जो दक्षिण दिशा में निवास करते हैं।

इनके अतिरिक्त सात महर्षि और हैं जो सब दिशाओं में निवास करते हैं, वे संसार को उत्पन्न करने वाले हैं।

हे युधिष्ठिर! उपर्युक्त महर्षियों का स्मरण करने से मनुष्य की कीर्ति में वृद्धि होती है और उसका कल्याण होता हैं।

ये सब ऋषिगण इस संसार का कल्याण और शाँति का विस्तार करने वाले तथा दिशाओं के पालक कहे जाते हैं। ये जिस-जिस दिशा में निवास करते हैं उस-उस दिशा की तरफ मुँह करके इनकी शरण ग्रहण करनी चाहिए। ये समस्त भूतों के स्रुष्टा और लोकपालक बताए गए हैं। मेरु, पर्वत सावर्णि, धर्मात्मा मार्कण्डेय, सांख्ययोग, महर्षि नारद और महर्षि दुर्वासा ये सात ऋषि तपस्वी जितेन्द्रिय और तीनों लोकों में प्रसिद्ध हैं। इन ऋषियों के अतिरिक्त बहुत से महर्षि रुद्र के समान प्रभावशाली हैं। इनका कीर्तन करने से ब्रह्मलोक की प्राप्ति होती है। इनका कीर्तन करने से दरिद्र धनवान बन जाता है और पुत्रहीन को पुत्र की प्राप्ति होती है। इनका स्मरण करने वाले व्यक्ति को धर्म, अर्थ और काम की सिद्धि होती हैं। वेन कुमार, नृप

श्रेष्ठ पृथुका जिनकी यह पृथ्वी पुत्री बन गई थी तथा प्रजापति एवं सार्वभौम सम्राट थे का कीर्तन अवश्य करना चाहिए।

त्रिलोकी के प्रसिद्ध वीर भरत का नामोच्चारण करें। इन्होंने सतयुग में गवामय यज्ञ किया था। ये सूर्यवंश में पैदा हुए और देवराज इन्द्र के समान पराक्रमी और बुद्ध के प्रिय पुत्र त्रिलोकी विख्यात राजा पुरुरवा का कीर्तन भी करें। विश्व विजेता तपस्या से युक्त, शुभ लक्षण सम्पन्न एवं परमतपस्वी महाराजा रन्ति देव का भी कीर्तन करें।

महातेजस्वी राजर्षि श्वेत का जिन्होंने सागर पुत्रों को गंगाजल से अपस्वित करके उद्धार किया था, उन महाराज भागीरथ का भी कीर्तन करना चाहिए।

ये सभी राजा अग्नि के समान तेजस्वी अत्यन्त रूपवान, महान बलशाली परमधीर और अपनी कीर्ति को बढ़ाने वाले थे। इन सबका भी कीर्तन करना चाहिए।

इस प्रकार ऋषियों, राजाओं और देवताओं का कीर्तन करना चाहिए। उत्तम द्रव्य काव्य सांख्ययोग तथा समस्त श्रुतियों के आधार भूत परब्रह्म परमात्मा का कीर्तन समस्त प्राणियों के लिए परमपावन और मंगलमय है। इनका कीर्तन करने से रोगों का नाश होता है। इससे सब कार्यों में उत्तम संतुष्टि प्राप्त होती है। हे युधिष्ठिर! मनुष्य को प्रतिदिन प्रातः और सायंकाल के समय शुद्धचित्त होकर भगवान का कीर्तन के साथ इन देवताओं ऋषियों और राजाओं के नाम भी लेने चाहिए।

ये देवता इस संसार की रक्षा करते हैं। वे बारिश करते हैं प्रकाश और वायु देते हैं तथा प्रजा की सृष्टि करते हैं। ये विघ्नों के

स्वामी विनायक श्रेष्ठ, दक्ष, क्षमाशील और जितेन्द्रिय हैं। ये सब मनुष्यों के पाप-पुण्य के साक्षी हैं। इनका कीर्तन करने से ये सब मनुष्यों के अमंगल को नष्ट करते हैं। जो व्यक्ति प्रातः उठकर इनके नाम और गुणों का उच्चारण करता है उसे शुभ कर्मों का भोग प्राप्त होता है। उस व्यक्ति के यहाँ अग्नि और चोरी का भय नहीं रहता। उसका मार्ग कभी अवरुद्ध नहीं होता। प्रतिदिन इन देवताओं का कीर्तन करने से व्यक्ति दुखों से बचा रहता है। सब पापों से वह मुक्त रहता है और यात्रा से सकुशल घर लौटता है। जो व्यक्ति दीक्षा के सभी अवसरों पर नियम से इन नामों का पाठ करता है वह न्यायाधीश, आत्मनिष्ठ, क्षमावान, जितेन्द्रिय तथा दृष्टि दोष से बचा रहता है।

बीमार मनुष्य इसका पाठ करने से रोग से मुक्त हो जाता है। जो सज्जन अपने घर में इन नामों का पाठ करता है, उसके कुल का कल्याण होता है।

जो किसान अपने खेत में इन नामों की माला पढ़कर खेती करता है उसकी पैदावार खूब होती है। गाँव के अन्दर रहकर जो व्यक्ति इन नामों की माला जपता है, यात्रा करते समय उसकी यात्रा सकुशल समाप्त होती है। अपने वंश की रक्षा हेतु, धन एवं वस्तुओं और औषधियों की रक्षा के लिए भी इस नामावलि का प्रयोग करना चाहिए। युद्ध काल में इन नामों का पाठ करने वाले क्षत्रिय को शत्रु पर विजय प्राप्त होती है।

जो व्यक्ति देवयज्ञ और श्राद्ध के समय इन नामों का पाठ करता है उसके हृदय में देवता का वास होता है और हव्य को पितर

सहर्ष स्वीकार करते हैं। चोरों का कोई भय नहीं रहता, शोक कम हो जाता है तथा पाप से छुटकारा मिल जाता है।

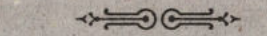

गायत्री मंत्र का महत्व

जो मनुष्य वायुयान, जलयान या किसी अन्य सवारी में बैठकर यात्रा करते समय गायत्री मंत्र का जप करता है, उसकी यात्रा एवं उद्देश्य सफल होता है। जो व्यक्ति गायत्री मंत्र का जप करता है, वह चारों आश्रमों में सदैव सम्पन्न व प्रफुल्ल रहता है। जिस घर में गायत्री मंत्र का जाप किया जाता है उस घर के काष्ठ के किवाड़ों में आग लगने का डर नहीं रहता। वहाँ अकाल मृत्यु नहीं होती तथा उस घर में साँप नहीं ठहरते।

जिस घर के निवासी गायत्री मंत्र के गुणों का कीर्तन करते हैं उन्हें कभी दु:ख नहीं सताते तथा वे परमगति को प्राप्त होते हैं। गौओं के मध्य में गायत्री का जप करने वाले व्यक्ति पर गौओं का वात्सल्य बहुत बढ़ जाता है। यह कथन महर्षि वेद व्यास का कहा हुआ है। इसमें पराशर मुनि के दिव्य मत का वर्णन है। पूर्व समय में इन्द्र को भी यही उपदेश दिया गया था।

यह गायत्री मंत्र सत्य एवं ब्रह्मस्वरूप है। यह सम्पूर्ण भूतों का हृदय एवं सनातन श्रुति है। गायत्री मंत्र संसार के सभी प्राणियों को परमगति प्रदान करता है। चंद्रवंश, सूर्यवंश और कुरुवंश के सभी राजा पवित्र मन से प्रतिदिन गायत्री मंत्र का जाप करते थे।

बृहस्पति अगस्त्य, शुक्र, अत्रि, अंगिरा, गौतम और कश्यप आदि ब्रह्मऋषियों ने सदैव ही गायत्री मंत्र का अवलम्बन लिया है। महर्षि भारद्वाज ने इसका भली भाँति मनन किया है। इस गायत्री मंत्र को ऋर्षिक पुत्रों ने उनसे प्राप्त किया तथा इन्द्र व वसुओं ने वशिष्ठ जी से गायत्री मंत्र को पाकर उसके प्रभाव से सम्पूर्ण दानवों को परास्त कर दिया। जो व्यक्ति विद्वान ब्राह्मण को सौ गायों के सीगों में सोना मढ़कर उसका दान करता है और दिव्य महाभारत कथा का प्रतिदनि प्रवचन करता है। उन दोनों को स्वप्न पुण्य फल प्राप्त होता है। भृगु का नाम लेने से धर्म की वृद्धि होती है। वशिष्ठ मुनियों को नमस्कार करने से वीर्य बढ़ता है। अश्विनी कुमारों का नाम लेने वाले मुनष्य को कभी रोग नहीं सताता। राजा रघु को प्रणाम करने वाला सदैव युद्ध में विजय प्राप्त करता है।

भीष्म पितामह ने कहा- हे युधिष्ठिर! यह सनातन ब्रह्मरूपी गायत्री का माहात्म्य मैने तुम्हें सुनाया है। अब तुम और ज़ो कुछ भी पूछना चाहते हो, पूछ सकते हो। युधिष्ठिर बोले- पितामह! मुझे मनुष्य के कल्याण का उपाय बताइए। क्या करने से व्यक्ति सुखी हो सकता है? किस कर्म के अनुष्ठान से उसका पाप दूर हो सकता है अथवा कौन सा कार्य पाप कराने वाला है।

पितामह बोले- बेटा! यदि तीनों संध्याओं के समय देव और ऋषिवंश का पाठ किया जाए तो मनुष्य दिन रात, सुबह सवेरे अपनी इंद्रियों द्वारा जानकर या अनजाने में जो पाप कर बैठता है, उन सबसे छुटकारा पाया जा सकता है तथा वह सदैव पवित्र रहता है। देवर्षि वंश का कीर्तन करने वाला पुरुष कभी बहरा और अँधा न होकर

सदा कल्याण का भागी होता है। वह तिर्मग्योति और नरक में नहीं पड़ता। शंकर योनि में जन्म नहीं लेता, कभी दु:ख से भयभीत नहीं होता और मृत्यु के समय व्याकुल नहीं होता।

देवता और ऋषि आदि के वंश की नामावलि इस प्रकार है- सर्वभूतन नमस्कृत, देवासुरगुरु, अचिन्त्य अनिदम्य सब के प्राण स्वरूप और आयोजित जगदीश पितामह भगवान ब्रह्माजी उनकी पत्नि सती सावित्री देवी वेदों के उत्पत्ति स्थान जगतकर्त्ता भगवान नारायण तीन नेत्रों वाले सभापति महादेव, देव सेनापति स्कन्द, विशारद, अग्नि, वायु, प्रकाश फैलाने वाले चन्द्रमा और सूर्य शशिपति इन्द्र, यमराज , उनकी पत्नि धूमोर्णा, गौरी के साथ वरुण, ऋषि संहित कुबेर, सौम्य स्वभाव वाली देवी सुरभोगी, महर्षि विश्रवा, संकल्प, सागर, गंगा आदि नदियाँ, मरुदगण, तप: सिद्ध बालखित्य ऋषि, श्रीकृष्ण द्वैपायन व्यास, नारद, पर्वत विश्रावसु, हा-हा, हू-हू, तुम्बरू, विख्यात देवदूत, चित्रसेन, महासौभाग्यशाली देव कन्याएँ, दिव्य अप्सराओं के समुदाय, उर्वशी, रम्भा, मेनका, मिश्र केशी, विश्राची, अलम्बुआ, त्रिलोचमा, पँच-चुड़ा और घृताची आदि दिव्य अप्सराएँ, ग्यारह रुद्र, आठ बसु, बारह आदित्य, अश्वनी कुमार, पितृ-धर्म, व्यवसाय, दीक्षा, तपस्या, शास्त्र ज्ञान, पितामह, रातदिन, मरीचि नन्दन, कश्यप, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, राहु, शनैचर, नक्षत्र, ऋतु, मास, पक्ष, संवत्सर, विनता के पुत्र गरुड़, समुद्र कटु के पुत्र सर्पगण, रातद्रु विपाशा, चन्द्रभागा, सरस्वती, सिन्धुदेविका प्रभास, पुष्कर गंगा, महानदी, वेना, नर्मदा, लाख जल वाला महानन्द, शोणभद्र, ताम्रा, अरुणा, त्रिशल्ला, कुलम्पुन, करतोया, सरचृगाण्डकी,

अम्दुवाहिनी, वेत्रवती पर्णाशा, गौतमी, गोदावरी वैष्या, कृष्णवेणा अद्रिजा, कावेरी, चक्ष, मंदाकिनी, प्रयाग, प्रभास, पुयण्न, नैमिषारण्य जहाँ विशेष एक स्थान है वह विमल सरोवर, स्वच्छ सलिल से युक्त पुण्य तीर्थ कुरुक्षेत्र उत्तम समुद्र, तपस्या, दान, जम्बुमार्ग, हिरवती वितस्ता, वेदस्मृति, मालव, आश्रंवती, पवित्र भू-भाग, समुद्र-गामिनी, पवित्र नदियाँ पुण्य सलिला चर्मण्वती नदी कौशिकि, यमुना, भागीरथी, महानदी, बाहवा, महेन्द्र वाणी, त्रिदिवा, लीलिका सरस्वती, नन्दा, अपनन्दा तीर्थ भूतमहान, हूद गया, फल्गू तीर्थ देवताओं से मुक्त धर्माण्य पवित्र देव नदी तीनों लोकों में विख्यात एवं पवित्र सर्वपाप नाशक कल्याणमय तथा अन्यान्य पर्वत दिशा विदिशा भूमि सभी वृक्ष विम्बेदेव, आकाश, नक्षत्र और ग्रहगण ये सदा हमारी रक्षा करें।

जो व्यक्ति उपर्युक्त देवता आदि का कीर्तन करता है और उनका अभिनन्दन करता है वह समस्त पापों एवं भयो. से मुक्त रहता है।

हे युधिष्ठिर! देवताओं और ऋषियों का मुख्य समुदाय अपने नाम से कीर्तन करने पर मनुष्यों को सब पापों से दूर रखता है।

इनके स्मरण से मुझ पर किसी विघ्न का आक्रमण न हो, मुझसे पाप न हो, मेरे ऊपर चारों ओर बदमाशों का जोर न चले, मुझे इस लोक में सदैव चिरस्थायी जय प्राप्त हो, परलोक में भी शुभगति मिले।

पेहवा पृथूदक तीर्थ

यह तीर्थ कुरुक्षेत्र में उससे 27 किमी० दूर पश्चिम दिशा में है। यह तीर्थ कुरुक्षेत्र के सब तीर्थों में सबसे अधिक महत्व रखता है। ईसा की प्रारम्भिक शती पेहवा प्रथूदक तीर्थ सरस्वती तथा कुरुक्षेत्र से भी अधिक पुण्यफल देने वाला माना गया है। कहते हैं कि इस तीर्थ की रचना स्वयं ब्रह्माजी ने पृथ्वी, जल, वायु एवं आकाश के सहयोग से सृष्टि के आदिकाल में की थी।

वामन पुराण अनुसार प्रथुदक तीर्थ में स्वयं भगवान शिव ने स्नान किया था। यहाँ पर पित्रों को पिण्ड दान कराने का बहुत महत्व है। इन्द्र देवता ने भी यहाँ पर अपने पित्रों का पिण्ड दान कराया था। कहते है कि भगवान कृष्ण ने भी यहाँ पर स्नान किया था।

वामन पुराण और महाभारत में रुषगु का वर्णन आया है। रुषगु गंगाद्वार पर रहता था। उसका गंगाद्वार पर रहकर कल्याण होना संभव नहीं था। इस कारण उसके उद्धार के लिए उसके पुत्रों ने उसे प्रथूदक तीर्थ में लेजाकर स्नान कराया जिसके कारण वह अमर हो गया। इस घटना से पता चलता है प्रथूदक तीर्थ का महत्व गंगाद्वार से अधिक था। राजा वैन के पुत्र प्रथू के नाम पर इस तीर्थ का नाम प्रथूदक पड़ा।

महाराजा वैन कोढ़ से पीड़ित थे। उन्होंने यहाँ पर स्नान किया और उनका कोढ़ ठीक हो गया। जिस जगह पर महाराजा वैन का कोढ़ ठीक हुआ था। उस स्थान पर सरस्वती नदी के किनारे पर राजा प्रथू ने अपने पिता के स्वर्गवास होने पर उनका क्रियाकर्म तथा श्राद्ध किया था तभी सभी प्राणियों को जल प्रदान किया था।

प्रथूदक तीर्थ की पवित्रता एवं महत्व का वर्णन पुराणों में अनेक जगहों पर किया गया है। प्रथूदक तीर्थ को पापहारी, कल्याणकारी, बहुपुण्य युक्त तथा सब तीर्थों में उत्तम माना गया है। महाभारत में वर्णित है कि जो मनुष्य सरस्वती के उत्तरी तट पर जप करता हुआ मृत्यु को प्राप्त होता है वह स्वर्ग को प्राप्त करता है।

चैत्र मास की कृष्ण चतुर्दशी के दिन यहाँ पर बहुत बड़ा मेला भरता है। मनुष्य मृतकों की मुक्ति के उद्देश्य से भी यहाँ पर आते हैं। इस तीर्थ में स्नान करने से लोगों के द्वारा जाने अनजाने में किए गए पापों से छुटकारा मिल जाता है। कहते हैं कि इस तीर्थ में स्नान करने से सात अश्वमेघ यज्ञों का फल मिलता है। इस तीर्थ में स्नान करने से बुरे से बुरे व्यक्ति को भी मुक्ति मिल जाती है।

फल्गू (फरल) तीर्थ

इस तीर्थ की गणना भी कुरुक्षेत्र के प्रसिद्ध तीर्थों में की जाती है। यह तीर्थ कुरुक्षेत्र के ब्रह्मसरोवर से 30 किमी० दूर जींद रोड पर फरल गाँव में स्थापित है। पुराणों एवं महाभारत में फलकीवन इसी जगह पर स्थित था। फलकीवन से ही इसका नाम फरल पड़ा। फलकीवन और फलकी तीर्थ दोनों दृषद्वती नदी के किनारे पर स्थित थे। कहते हैं कि फलकी वन में पाण्डवों के वंशज अधि सोम कृष्ण ने यहाँ दो वर्ष का सत्र किया था। ऋषि मुनियों ने फलकी वन में सहस्रों वर्षों तक तपस्या की थी।

फल्गू तीर्थ में श्राद्धों के महीनें में सोमवती अमावस्या के दिन

स्नान करने से गयाजी में स्नान करने के समान पुण्य प्राप्त होता है। इस दिन पिण्ड दान करवाने से पितृ तृप्त हो जाते हैं। महाभारत एवं पुराणों में बताया गया है कि इस तीर्थ को मन ही मन में स्मरण कर लेने से ही पितृ तृप्त हो जाते हैं। कहते हैं कि मिश्रक तीर्थ भी यहीं पर था। मुनि व्यास ने देवताओं के लिए सभी तीर्थों के पुण्य फल को यहाँ पर एकत्रित किया था।

गालव तीर्थ, गुलडेहरा

इस तीर्थ का संबंध महर्षि विश्वामित्र के पुत्र महर्षि गालव से है। गालव ऋषि ने इस स्थान पर एक लम्बी अवधि तक घोर तपस्या की थी। तब से ही ऋषि के नाम पर यह तीर्थ गालव तीर्थ के नाम से ही विख्यात हुआ। ग्राम्य भाषा में लोग इसे गालिब तीर्थ के नाम से पुकारते हैं। यही गालिब तगालव ऋषि अपनी उपस्थिति से देवराज इन्द्र और धर्मराज युधिष्ठिर की सभी की शोभा बढ़ाते थे, ऐसा वर्णन महाभारत के सभा पर्व में आया है।

इस तीर्थ में एक सरोवर एवं दो छोटे मंदिर हैं। सरोवर मंदिर परिसर के उत्तर में स्थित है। इस समय ये मंदिर एवं घाट बहुत ही जीर्णशीर्ण अवस्था में हैं। मंदिर का शिखर अष्ट भुजाधार एवं गुम्बदाकार है। इस मंदिर की यह विशेषता है कि इसमें किसी देवी देवता की मूर्ति नहीं है।

महाभारत के अध्ययन से पता चलता है कि महर्षि गालव ने अपने पिता महर्षि विश्वामित्र से ही शिक्षा ग्रहण की थी। इनकी गुरु भक्ति से प्रसन्न होकर इनके गुरु विश्वामित्र ने विद्या समाप्त होने

पर इनसे गुरु दक्षिणा लेने से मना कर दिया था परन्तु महर्षि गालव के बार बार जिद करने पर विश्वामित्र ने क्रोधित होकर इनसे 800 ऐसे घोड़े लाने को कहा जिनका एक कान काला हो।

गालव ऋषि ऐसी गुरु दक्षिणा को सुनकर बड़े दुखी हुए। गरुड़ के परामर्श पर यह राजा ययाति के महल में गए। तब महाराज ययाति ने ऋषि की सहायता के लिए अपनी पुत्री माधवी को उनके साथ भेज दिया। माधवी की सहायता से ये तीन नरेशों के पास गए। वहाँ पर इन्हें केवल 600 घोड़े ही मिल पाए। संकट के इस क्षण में पक्षीराज गरुड़ पुनः इनके पास आकर बोले कि शेष 200 घोड़ों के स्थान पर माधवी को ऋषि विश्वामित्र को सौंप दो ताकि गुरुदक्षिणा पूरी हो सके। गालव ऋषि से उचित गुरुदक्षिणा पाकर विश्वामित्र बहुत प्रसन्न हुए और उन्हें आशीर्वाद प्रदान किया।

सप्त सारस्वत तीर्थ

सप्त सारस्वत तीर्थ तक पहुँचने के लिए गाँव की गलियों से होकर जाना पड़ता है। सरस्वती नदी के दक्षिण-पश्चिम तट पर यह तीर्थ स्थित है।

सप्त सारस्वत का अर्थ है सात सरस्वतियों का संगम। क्योंकि इस स्थान पर सात सरस्वतियों का संगम होता है, इसी कारण इस तीर्थ का नाम सप्त सारस्वत पड़ा। सात सरस्वतियों का संगम होने के कारण वामन पुराण में इस तीर्थ को त्रैलोक्य में दुर्लभ कहा गया है। वामन पुराण में इस तीर्थ के माहात्म्य एवं सरस्वती के सातों

नामों का स्पष्ट उल्लेख है-

सप्तसारस्वतं तीर्थं त्रैलोक्यस्यापि दुर्लभम्।
यत्र सप्त सरस्वत्य एकीभूता वहन्ति च॥
सुप्रभा कांचनाक्षी च विशाला मानसह्रदा।
सरस्वत्योघनामा च सुवेणुर्विमलोदका॥

वामन पुराण 37/17-18

तीनों लोकों में दुर्लभ सप्तसारस्वत तीर्थ में सात सरस्वती एक होकर बहती हैं। उनके नाम क्रमशः इस प्रकार हैं- सुप्रभा, कांचनाक्षी, विशाला, मानसह्रदा, सरस्वती ओधनामा, विमलोदका एवं सुवेणु एक होकर प्रवाहित होती हैं।

महाभारत में सात सरस्वतियों का उल्लेख निम्न श्लोक में किया गया है-

राजन्सप्तसरस्वत्योः याभिर्व्याप्तं इदं जगत्।
आहुताबलवद्भिर्हि तत्रतत्र सरस्वती।
सुप्रभा कांचनाक्षी च विशाला च मनोरमा।
सरस्वती चौधवती सुरेणुर्विमलोदंका।

महाभारत, शल्य पर्व, 38/4

वामन पुराण की मानसह्रदा तथा सुवेणु को महाभारत में क्रमशः मनोरमा तथा सुरेणु कहा गया है।

महाभारत तथा वामन पुराण में सप्तासारस्वत तीर्थ से सम्बन्धित कथा में पर्याप्त साम्य है। महाभारत के शल्य पर्व के 38वें अध्याय (अवान्तर पर्व, गदायुद्ध पर्व) में इस तीर्थ से सम्बन्धित कथा का वर्णन दिया गया है।

एक बार ब्रह्माजी द्वारा पुष्कर तीर्थ में यज्ञ का अनुष्ठान किया गया था। सप्त ऋषियों ने उनसे कहा कि आपका यह यज्ञ महान फलदायी नहीं होगा क्योंकि यहाँ नदियों में श्रेष्ठ सरस्वती नदी के दर्शन नहीं हो रहे हैं। ब्रह्माजी के प्रसन्नतापूर्वक स्मरण किए जाने पर सुप्रभा नाम की देवी वहाँ सरस्वती के नाम से प्रसिद्ध हुई। पुष्कर तीर्थ में स्थित नदियों में श्रेष्ठ इसी सरस्वती को महात्मा मंकणक कुरुक्षेत्र में लाए। इस तरह ये सप्त सरस्वतियाँ क्रमशः पुष्कर में सुप्रभा, नैमिष में कांचनाक्षी, गया में विशाला, उत्तर कौशल में मानसहृदा, केदरा में सुवेणु, गंगाद्वार में विमलादका तथा कुरुक्षेत्र में सरस्वती नाम से बहती हैं।

एक अन्य अवसर पर नैमिष तीर्थ में बहुत से ऋषि मुनि एकत्र हुए। वहाँ वेदों का स्वाध्याय तथा वेदों पर चर्चा करते हुए ऋषियों ने सरस्वती नदी का स्मरण किया। ऋषियों द्वारा यज्ञ का आयोजन किए जाने पर उनकी सहायता हेतु सरस्वती वहाँ पर प्रकट हुई तथा वह कांचनाक्षी नाम से विख्यात हुई। तब समस्त ऋषियों ने सरस्वती की वंदना की।

एक बार महाराज गया ने गया क्षेत्र में एक विशाल यज्ञ का आयोजन किया। वहाँ उपस्थित ऋषियों द्वारा सरस्वती का आह्वान किए जाने पर सरस्वती उपस्थित हुईं। ऋषियों ने उनका नाम विशाला रखा। वह शीघ्रगामिनी नदी हिमवान के पार्श्व से उत्पन्न हुई थी।

एक अन्य अवसर पर उत्तर कौशल में महर्षि उद्दालक ने यज्ञ आयोजन से पूर्व सरस्वती का आह्वान किया। मन में अनेक ऋषि मुनियों ने भाग लिया। ऋषि मुनियों की सहायतार्थ सरस्वती नदी

वहाँ प्रकट हुई। यहाँ पर ऋषियों द्वारा मन से स्मरण करने के कारण वह मनोरमा नाम से प्रसिद्ध हुई।

महाराज कुरु ने कुरुक्षेत्र में यज्ञ किया। कुरुक्षेत्र में महर्षि वशिष्ठ के आह्वान पर सरस्वती नहीं प्रकट हुई तथा औधवती के नाम से प्रसिद्ध हुई

एक बार महाराज दक्ष ने गंगाद्वार पर यज्ञ का आयोजन किया। वहाँ पर सरस्वती नदी शीघ्रगामिनी सुरेणु के नाम से प्रसिद्ध हुई।

एक बार ब्रह्माजी द्वारा हिमालय पर्वत के पवित्र वन में यज्ञानुष्ठान करने पर सरस्वती नदी का स्मरण करने पर वह विमलोदका नाम से प्रसिद्ध हुई।

उपरोक्त सभी सातों नदियाँ इस तीर्थ में एकत्र हुई। इसी से इस तीर्थ को सप्त सारस्वत नाम से जाना जाता है।

इसी तीर्थ से सम्बन्धित एक अन्य कथा के अनुसार महर्षि मंकणक कुशाग्र से क्षत हो जाने पर उनके हाथ से वानस्पतिक तरल पदार्थ बहने लगा। उसे देख हर्ष से रोमांचित होकर ऋषि नृत्य करने लगे। उनके नृत्य से आकर्षित होकर समस्त चराचर पदार्थ भी नृत्य करने लगे। ऐसी अवस्था को देखकर चिन्तित हुए देवता, सिद्ध एवं ब्रह्मा जी ने शिव से प्रार्थना की कि वे कोई ऐसा उपाय करें जिससे ऋषि का नृत्य बँद हो जाए। इस पर देवताओं की प्रार्थना को स्वीकार कर शिवजी मंकणक ऋषि के पास आए तथा उनसे नाचने का कारण पूछा। तब नृत्य करते ऋषि ने अपने नृत्य का कारण शाकरस का बहना बताया। यह सुनकर महादेव ने अपनी अँगुली के अग्रभाग से अँगूठे पर एक घाव किया। इससे वहाँ से हिम सदृश

श्वेत भस्म निकलने लगी। इसे देखकर ऋषि बहुत लज्जित हुए और शिवजी के पैरों पर गिरकर क्षमायाचना माँगने लगे एवं शिव स्तुति करने में लग गए। शिवजी ने प्रसन्न होकर कहा कि हे विप्रवर। मेरी कृपा से तुम्हारा तप सहस्रधारा होकर वृद्धि को प्राप्त होगा तथा तुम्हारे साथ मैं स्वयं इस आश्रम में निवास करूँगा। इसके साथ ही उन्होंने सारस्वत तीर्थ में स्नान करने वालों को सब कुछ सुलभ होने तथा सारस्वत लोक की प्राप्ति का वर भी दिया।

सप्तसारस्वेत स्नात्वा अर्च्चमिष्यन्ति ये तु माम्।
न चेषां दुर्लभं किंचिदिह लोके परत्र च॥
सारस्वतं च ते लोकं गमिष्यन्ति न संशयः।

महाभारत, वनपर्व 61/133-134

भावार्थ- सप्त सारस्वत में स्नान करने एवं मेरी अर्चना करने वाले भक्त के लिए इस लोक में कुछ भी दुर्लभ नहीं होगा तथा वे निःसंदेह सारस्वत लोक को जाएँगे।

वास्तुकला की दृष्टि से यहाँ कोई धार्मिक स्मारक नहीं है परन्तु चमत्कार की दृष्टि से यहाँ एक प्राचीन कुँआ है जो लोगों के आकर्षण का केन्द्र है। इस कुँए को गंगाकूप कहते हैं। जनश्रुति के अनुसार बैशाखी के पर्व पर इस कुँए में एकाएक गंगा नदी के प्रकट होने से इसका जलस्तर बढ़ जाता है और पानी का रँग दूधिया हो जाता है। उस दिन का पानी गंगा जल के समान ही गुणधर्म वाला हो जाता है तथा काफी समय तक खराब नहीं होता।

श्रद्धालु लोग बैशाखी के दिन इस कुँए के पानी से अत्यन्त धार्मिक भावना के साथ स्नान करते हैं। उस दिन इसका महत्व गंगा

स्नान के बराबर माना जाता है। यहाँ के शिव मंदिर का जीर्णोधार करके आधुनिक टाइलों से सुसज्जित किया गया है। मंदिर के गर्भ गृह में लाल बलुआ पत्थर से निर्मित एक विशाल खण्डित शिवलिंग है।

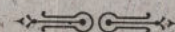

ज्योतिसर

ज्योतिसर का अर्थ है प्रकाश अर्थात ज्ञान रूपी प्रकाश का सरोवर। महाभारत का युद्ध इसी स्थान पर हुआ था। लोक कथा के अनुसार ज्योतिसर में भगवान श्रीकृष्ण ने महाभारत युद्ध प्रारम्भ होने से पहले विषाद तथा मोहग्रस्त अर्जुन को गीता का दिव्य संदेश देकर उसे कर्त्तव्य की ओर प्रेरित किया था। इस समय ज्योतिसर के तट पर अक्षय वट स्थित है। पास में ही श्वेत सँगमरमर से निर्मित कृष्ण अर्जुन का रथ बना हुआ है। लोक कथा के अनुसार इसी पवित्र भूमि पर आदि शंकराचार्य जी ने श्रीमदभगवद् गीता दर्शन का मनन एवं चिंतन किया था।

सर्वप्रथम 1850 में कश्मीर के महाराज ने यहाँ एक शिव मंदिर बनवाया था। सन् 1924 में अक्षवट के चारों ओर एक पक्के चबूतरे को बनवाया था। सन् 1967 में कामकोटि पीठ के शंकराचार्य जी के प्रयास से आदि शंकराचार्य के मंदिर और श्रीकृष्ण अर्जुन रथ का निर्माण हुआ।

यहाँ प्रतिवर्ष अब मार्गशीर्ष माह की शुक्ल पक्ष की एकादशी से 18 दिनों तक गीता जयन्ती समारोह आयोजित होता है। सूर्य ग्रहण

के अवसर पर भी यहाँ तीर्थ यात्री अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं।

इस तीर्थ के जीर्णोद्धार में कुरुक्षेत्र विकास बोर्ड का बहुत हाथ रहा है। इसके जीर्णोद्धार पर बोर्ड ने अब तक 16.5 लाख रुपये व्यय किए हैं। बोर्ड तीर्थ के पुनर्निमाण एवं उसको विकसित रूप प्रदान करने में निरन्तर प्रयासरत है। अब यात्रियों के स्नान हेतु सरोवर में नखाना नहर से लगातार शुद्ध एवं स्वच्छ जल आता रहता है। हरियाणा पर्यटन विकास बोर्ड ने ज्योतिसर में पेहवा मार्ग पर जल-पान गृह के साथ-साथ तीर्थ यात्रियों की सुविधा के लिए एक विश्राम गृह का भी निर्माण कराया है।

धन्य है गीता जैसे ज्ञान की प्रकाशिका ज्योतिसर की यह पावन धरा।

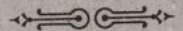

भद्रकाली मंदिर

ऐतिहासिक मान्यता के अनुसार यह सिद्ध पीठ सम्पूर्ण भारतवर्ष की 51 पीठों में से एक है। पौराणिक कथा के अनुसार दक्ष के यज्ञ में उसकी पुत्री सती ने अपने पति शंकर भगवान का भाग न देखकर तथा अपने पिता द्वारा अपने पति की निन्दा करते सुनकर इतनी दुखी एवं क्रोधित हुई कि उसने यज्ञ कुण्ड में ही अपनी देह का त्याग कर दिया।

जब भगवान शंकर को सती के देह त्याग का समाचार मिला तो उन्होंने वहाँ आकर सती के मृत देह को अपने कँधे पर धारण

कर उन्मत भाव से नृत्य करते हुए तीनों लोकों में विचरण करने लगे। भगवान शिव की ऐसी दशा को देखकर भगवान विष्णु ने अपने चक्र से सती के शरीर को छोटे-छोटे टुकड़ों में विभजित कर दिया। सती की देह 51 टुकड़ों में विभिक्त हो गयी। जिन जिन जगहों पर ये देहावशेष गिरे, उन्हीं जगहों पर शक्ति पीठों की स्थापना की गई। कुरुक्षेत्र में स्थित इस तीर्थ में सती की देह के दाहिने पाँव की एड़ी गिरी थी वहाँ सावित्री देवी एवं स्थाणु भैरव प्रकट हुए। यह तीर्थ वही महान शक्ति पीठ है।

कुरुक्षेत्रऽपरो गुल्फः सावित्री स्थाणु भैरवम्।
गत्वा सुशोभिते नित्यं देव्याः पीठो महान्भुवि॥

लोक प्रचलित कथा के अनुसार यह वही स्थान है, जहाँ महाभारत युद्ध प्रारम्भ होने से पूर्व श्रीकृष्ण ने अर्जुन को युद्ध में स्वयं की विजय तथा शत्रुओं की पराजय हेतु शाँत एवं पवित्र चित से श्री दुर्गा स्त्रोत का पाठ करने को कहा था। श्रीकृष्ण के कहने पर अर्जुन ने अँजलिबद्ध होकर माँ भगवती की स्तुति की और माँ भगवती ने प्रसन्न होकर अर्जुन को अजेय होने का वरदान दिया।

भद्रकाली दुर्गाजी का ही एक नाम है। महाभारत के भीष्म पर्व में यह वर्णन है कि अर्जुन ने इसी नाम से वरदायिनी दुर्गा जी की स्तुति की थी।

महाभारत, भीष्मपर्व 23/5

महाभारत के शाँति पर्व में यह वर्णन है कि ये दक्ष के यज्ञ-विध्वंस के समय पार्वती के कोप से प्रकट हुई थीं।

महाभारत, शाँतिपर्व 264/53-54

महाभारत के शल्य पर्व में यह भी वर्णन है कि यह स्कन्द की अनुचरी एक मातृका थी।

महाभारत, शल्यपर्व 46-11

माँ भद्रकाली मंदिर में स्थित पवित्र कूप सती एवं देवी कूप के नाम से विख्यात है।

इस तीर्थ पर दशहरे के अवसर पर एक विशाल मेले का आयोजन किया जाता है।

नवरात्रों के अवसर पर भी इस तीर्थ पर श्रद्धालाओं की अपार भीड़ उमड़ पड़ती है।

हरियाणा की यह अति प्राचीन सिद्ध पीठ थानेसर शहर की झाँसा रोड पर चुँगी के पास स्थित है। यह 51 शक्ति पीठों में से एक है तथा इससे संबंधित शिवपीठ का नाम स्थानेश्वर है।

जनसाधारण में इस तीर्थ के प्रति अत्यन्त श्रद्धा देखने को मिलती है। प्रचलित मान्यता व विश्वास के अनुसार जो व्यक्ति देवी कूप पर जाकर माँ भगवती के सामने कोई कामना करता है तो उसकी वह कामना माँ की कृपा से अवश्य पूरी हो जाती है। मनोकामना के पूर्ण होने पर भक्तजनों के द्वारा यहाँ पर मिट्टी के अश्व चढ़ाए जाते हैं।

श्रीमदभागवत् पुराण के अनुसार बचपन में भगवान श्रीकृष्ण का मुण्डन संस्कार भी इसी मंदिर में हुआ था।

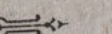

बाण गंगा दयलपुरा

कुरुक्षेत्र के अधिकतर तीर्थों का संबंध महाभारत की घटनाओं से रहा है। बाण गंगा नामक यह तीर्थ कुरुक्षेत्र ब्रह्मसरोवर के दक्षिण की ओर 4.8 किमी० की दूरी पर दयालपुरा नामक गाँव में स्थित है।

लोक कथा के अनुसार महाभारत युद्ध के दौरान अभिमन्यु की अन्यायपूर्ण मृत्यु से दुखी होकर अर्जुन ने जयद्रथ को सूर्यास्त से पूर्व मारने की प्रतिज्ञा की थी। दिन भर के परिश्रम से कलान्त रथ के अश्वों को भगवान श्रीकृष्ण के आग्रह पर अर्जुन ने दोपहर के समय कुछ क्षणों का विश्राम इस स्थान पर दिया था। अश्वों की थकान को भगाने व उन्हें नई स्फूर्ति देने के उद्देश्य से अर्जुन ने यहाँ धरती पर बाण मारकर गंगा को प्रकट किया था। श्रीकृष्ण ने गंगा के जल से अश्वों को स्नान कराया था तथा उन्हें शीतल जल पिलाया था। इसी कारण शायद इस तीर्थ पर मिट्टी के बने अश्वों को चढ़ाया जाता है।

इस तीर्थ के पश्चिम में वर्गाकार 99-99 फीट का एक सरोवर है जिसका वर्तमान में जीर्णोद्धार किया गया है। इसी सरोवर के पश्चिम में एक दूसरा कच्चा सरोवर है जिसका पानी पशुओं को पिलाने के काम में लिया जाता है। ऐसा प्रतीत होता है कि पूर्व में यह दोनों सरोवर एक ही रहे होंगे। सरोवर के तल में उत्तर दक्षिण की तरफ ईंटों से एक विशाल धनुषाकृति का निर्माण किया गया है जिसकी डोरी लोहे की बनी है।

सरोवर के उत्तरी दिशा में वाल्ट के आकार एवं वर्गाकार आधार से उठाई गई लखौरी ईंटों से निर्मित एक समाधि है। तीर्थ

परिसर के चारों ओर आम, पीपल, नीम इत्यादि के वृक्ष हैं। दोनों सरोवरों के बीच में गाँव तक पहुँचने के लिए पक्का रास्ता है।

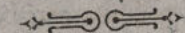

ब्रह्म सरोवर, कुरुक्षेत्र

ब्रह्मसरोवर कुरुक्षेत्र रेलवे स्टेशन से 3 किमी० दूर कुरुक्षेत्र विश्व विद्यालय के पास स्थित है। यहाँ तक पहुँचने के लिए पक्के राजमार्ग की व्यवस्था है। यात्री सुगमतापूर्वक वाहनों द्वारा या पैदल चलकर भी सरोवर तक पहुँच सकते हैं।

कुरुक्षेत्र की पावन धरा प्राचीन काल से ही अपने तीर्थों के लिए प्रसिद्ध रही है। इस क्षेत्र के अधिकतर तीर्थ ब्रह्मा, विष्णु और महेश इन तीन त्रिदेवों से सम्बन्धित हैं। ब्रह्मा से सम्बन्धित ब्रह्मसरोवर तीर्थ सृष्टि के आदि तीर्थ के नाम से विख्यात रहा है। वामन पुराण में ब्रह्मसरोवर तीर्थ का उल्लेख करते हुए महर्षि लोमहर्षण का कथन है-

ब्रह्माणमीशं कमलासनस्थं विष्णुं च लक्ष्मीसहितं तथैव।
रुद्रं च देवं प्रणिपत्य मूर्ध्ना तीर्थं वरं ब्रह्मसरः प्रवक्ष्ये॥

वामन पुराण 22-50

उपर्युक्त श्लोक से ब्रह्मसरोवर का विशिष्ट महत्व स्वयं सिद्ध हो जाता है। वामन पुराण के अनुसार इस तीर्थ की स्थापना ब्रह्मा ने पृथूदक तीर्थ के पास सरस्वती तट पर की थी।

तत्रैव ब्रह्मयोन्यस्ति ब्रह्मणा यत्र निर्मिता।

पृथूदकं समाश्रित्य सरस्वत्यास्तटे स्थितः॥

वामन पुराण 18-21

महर्षि परशुराम ने अनेक बार पितृतर्पण हेतु यज्ञ किए जाने के कारण इस तीर्थ का नाम समन्तपँचक हुआ। वामन पुराण में पहले इसे ब्रह्मसुर तथा बाद में रामह्रद की सँज्ञा से व्यवहत किया गया।

आद्यं ब्रह्मसरः पुण्यं ततो रामह्रद स्मृतः।

वामन पुराण में ही अन्यत्र ऐसा भी उल्लेख है कि सृष्टि रचना को ध्यान में रखते हुए ब्रह्माजी ने चारों वर्णों की सृष्टि इसी जगह पर की थी।

कुरुक्षेत्र के इस पवित्रतम तीर्थ का धार्मिक महत्व का वर्णन पुराणों एवं महाभारत में यत्र-तत्र दिखालई देता है। वामन पुराण में इसके महत्व के बारे में वर्णन किया गया है-

चतुर्मुखं ब्रह्मतीर्थं सरो मर्यादया स्थितम्।
ये सेवन्ते चतुर्दश्यां सोपवांसा वसन्ति च।
अष्टम्यां कृष्णपक्षस्य चैत्रे मासि द्विजोत्तमाः।
ते पश्यन्ति परं सूक्ष्मं यस्मात् नावर्तते पुनः।

वामन पुराण 21/28-29

अर्थ चतुर्दशी तथा चैत्र माह की कृष्ण पक्ष की अष्टमी को इस तीर्थ में स्नान करने तथा उपवास करने वाला व्यक्ति सूक्ष्मातिसूक्ष्म परब्रह्म का दर्शन कर जन्म मरण के बँधन से मुक्त हो जाता है।

ऐसा भी उल्लेख आया है कि सूर्य ग्रहण के अवसर पर यहाँ पर स्नान करने से सहस्त्र अश्वमेघ यज्ञों जितना फल प्राप्त होता है। शायद इसी वजह से सूर्य ग्रहण के मौके पर लाखों श्रद्धालुजन स्नान

ध्यान व पूजा अर्चना करने हेतु यहाँ पर आते हैं। वामन पुराण में कहा गया है कि मोक्ष का अभिलाषी यहाँ स्नान करके आवागमन के बँधन से छूट जाता है।

तत्र स्नात्वा मुक्तिकामः पुनर्योनिं न पश्यन्ति।

वामन पुराण 18/25

महाभारत में स्पष्ट रूप से उल्लख आया है कि इस तीर्थ में स्नान करने वाला मनुष्य ब्रह्मलोक में जाता है तथा निःसन्देह अपने कुल का उद्धार करने वाला होता है।

तत्र समासाहा नरव्याघ्र ब्रह्मलोकं प्राप्यते।
पुनात्यास्वकां चैवं कुलं नास्त्यत्र संशयः।

महाभारत, वनपर्व 83/112

धार्मिक आख्यानों के आधार पर पुरूरवा और उर्वशी का संवाद भी इसी सरोवर के तट पर होने की बात सिद्ध होती है।

सन् 1850 ई में थानेसर के कलेक्टर श्री लरकिन द्वारा इस तीर्थ को खुदवाकर इसका पुनर्निर्माण कराया गया था, परन्तु इस तीर्थ को वर्तमान स्वरूप देने का सम्पूर्ण श्रेय परमश्रद्धेय स्वर्गीय श्री गुलजारी लाल नन्दा को जाता है। उनके प्रेरणादायी तत्वाधान से ही तीर्थों के संरक्षण एवं विकास हेतु सन् 1968 ई में कुरुक्षेत्र विकास मण्डल का गठन किया गया था। कुरुक्षेत्र विकास मण्डल के गठन के तुरन्त बाद सर्वप्रथम ब्रह्मसरोवर के नवीनीकरण एवं विकास सम्बन्धी कार्य प्रारम्भ किया गया।

विशाल ब्रह्मसरोवर का विकास कार्य कुरुक्षेत्र विकास बोर्ड कर रहा है। चारों तरफ से सरोवर को छोटा किया गया है। सरोवर

की गहराई 15 फुट रखी गई है। इसके चारों ओर हरी भरी मनोहारिणी वनस्थली जैसी सौन्दर्य की व्यवस्था की गई है। स्त्रियों के लिए प्रथक घाट की व्यवस्था की गई है। शौचालयों की समुचित व्यवस्था की गई है। सरोवर के मध्य में महादेव का मंदिर तथा दोनों भागों में मध्य में चन्द्रकूप है।

दूर-दूर तक शुभ्रनीलिमा से युक्त इसकी स्वच्छ तथा स्निग्ध जल राशि मनुष्य के हृदय को अनुपम शांति से तृप्त करती है।

पूर्वी ब्रह्मसरोवर की लम्बाई 1800 फुट चौड़ाई 1500 फुट और गहराई 15 फुट तथा पश्चिमी ब्रह्मसरोवर की नाप 1500× 150×15 फुट है। सरोबर के चारों ओर लाल पत्थर का 20 फुट चौड़ा प्लेटफार्म, 18 फुट चौड़ी 6 सीढ़ियाँ तथा 40 फुट चौड़ा विशाल परिक्रमा पथ बनाया गया है। इस परिक्रमा पथ मेहराब निर्मित लघु गृहों से सुसज्जित किया गया है। वास्तव में ये लघु गृह तीर्थ यात्रियों तथा पर्यटकों की सुविधा हेतु निर्मित किए गए हैं।

इस सरोवर के समीप अनेक प्राचीन और आधुनिक मंदिर वास्तुकला की विभिन्न शैलियों से निर्मित हैं। सरोवर के मध्य में महादेव का मंदिर शोभायमान है। लोक कथा के अनुसार ब्रह्माजी ने सर्वप्रथम यहाँ पर शिवलिंग की स्थापना की थी। इस मंदिर तक पहुँचने के लिए एक सेतु का भी निर्माण किया गया है। इस मंदिर के चारों कौनों में नागर शैली में निर्मित चार शिखर बनाए गए हैं जो वास्तु कला की दृष्टि से अनूठे हैं।

ब्रह्मसरोबर की उत्तरी दिशा में एक प्राचीन घाट के अवशेष देखने को मिलते हैं, जिसे शेरों वाला घाट के नाम से जाना जाता

है। इस घाट का निर्माण ईस्ट इंडिया कम्पनी के शासन काल में सन् 1855 में हुआ था। नाम केअनुसार इस घाट के मेहराब के ऊपर एक लम्बे प्लेटफार्म पर दो सिंहों को एक दूसरे के सम्मुख बनाया गया है। इस सरोवर से थोड़ी दूरी पर एक प्राचीन बौद्ध स्तूप पुरातत्व उत्खनन से प्राप्त हुआ है जो सातवीं सदी का माना जाता है। शायद इसी स्तूप के सम्बन्ध में ह्वेनसाग ने अपनी पुस्तक सीयूकी में इसका वर्णन किया है तथा अलेक्जेंडर कनिंछम ने भी इसी स्तूप के बारे में अपने विवरण में बताया है।

ब्रह्मसरोवर की विशालता के बारे में अकबर के राजदरबार के लेखक अबुल फजल ने इसकी तुलना एक लघु समुद्र से की है तथा इतिहासकार अलबरूनी ने भी इसी सरोवर की पवित्रता के बारे में अपनी किताब उल-हिन्द में बताया है।

कुलोत्तारण तीर्थ किरमिच

वामन पुराण में इस तीर्थ का निर्माता भगवान विष्णु को बताया गया है। यह तीर्थ कुलों का उद्धार करने वाला है।

ततो गच्छेत विप्रेदास्तीर्थं कतमषनाशनम्?
कुलोत्तारणनामानं विष्णानां कल्पिते परा।
वर्णानामाश्रमाणां च तारणाय सुनिर्मलम्।

वामन पुराण 36-74

उपरोक्त श्लोक से स्पष्ट है कि पापनाशक इस कुलोत्तारण

तीर्थ को वर्णों एवं आश्रमों का पालन करने वाले व्यक्तियों के कल्याण हेतु भगवान विष्णु ने बनवाया था।

इस तीर्थ का माहात्म्य वामन पुरान में विस्तार से वर्णन किया गया है-

ब्रह्मचर्यात परं मोक्षं य इच्छन्ति सुनिर्मलम्।
तेऽपि तत्तीर्थमासाद्य पश्यन्ति परमं पदम्।
ब्रह्मचारी गृहस्थश्च: वानपप्रस्थो यतिस्तथा।
कुलानि तारयेत् स्नातः सप्त सप्त च सप्त च।

वामन पुराण 36/75-76

अर्थ जो व्यक्ति ब्रह्मचर्य को मोक्ष मुक्ति का साधन मानते हैं, भी इस तीर्थ में जाकर परमपद का साक्षात्कार कर लेते हैं। चारों आश्रमों का पालन करने वाला व्यक्ति (चार आश्रम-ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, ानप्रस्थ और यति) इस तीर्थ में स्नान करने से अपने वंश के 21 लों का उद्धार कर लेता है। इसी तीर्थ के महत्व को विस्तार से ताते हुए आगे लिखा है कि कुलोत्तारण तीर्थ का सेवन करने वाला क्ति अपने मातामह और पितामह के समस्त वंशों का उद्धार कर ता है।

कुलोत्तारणमासाद्य तीर्थसेवी द्विजोत्तमः।
कुलानि तारयेत सर्वान् मातामहपितामहान्॥

वामन पुराण 37/4-5

महाभारत में इस तीर्थ को कुलुम्पुन कहा गया है जिसका ब्दिक अर्थ कुल का उद्धार करने वाला है।

कुलम्पुने नरः स्नात्वा पुनाति स्वकुलं।

महाभारत वन पर्व 83-104

अर्थ- कुलम्पन तीर्थ में स्नान करने वाला व्यक्ति अपने कुल को पवित्र कर देता है।

इस तीर्थ को साधारण व्यक्तियों में ऐसी मान्यता पाई जाती है कि यहाँ पर वीरगति को प्राप्त हुए वीरों को उनके परिजनों ने श्रद्धाजँली दी थी। लोक कथा के अनुसार इस तीर्थ का निर्माण धर्मराज युधिष्ठिर ने कराया था।

इस तीर्थ के उत्तर में एक सरोवर है जो प्राकृतिक बँधो द्वारा तीन भागों में विभक्त है। सरोवर के दक्षिणी तट पर लखौरी ईंटों से बने पक्के घाट हैं। घाटों के दोनों ओर अष्ट भुजाकार बुर्जियाँ बनी हैं। स्त्री-पुरुषों के प्रथक प्रथक घाट बने हैं। यहाँ पर उत्तर मध्यकालीन अष्ट भुजाकार आधार पर बने कमल दल का स्वरूप लिए हुए गुम्बद आकार शिखर वाले दो मंदिर हैं। एक शिव मंदिर और दूसरा हुनमान मंदिर।

शिव मंदिर के दरवाजे में पत्थर का प्रयोग किया है। हनुमान मंदिर को सँगमरमर और आधुनिक रंगों से अलंकृत किया गया है। तीर्थ परिसर में ही उत्तर मध्यकालीन नागर शैली में शंक्वाकार शिखर वाला एक अन्य शिव मंदिर भी बना हुआ है।

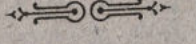

सान्निहित सरोवर, कुरुक्षेत्र

सन्नहित तीर्थ की गिनती देश के सबसे अधिक प्राचीन और पुण्य प्रदान करने वाले तीर्थों में की जाती है।

इस तीर्थ के धार्मिक महत्व का वर्णन महाभारत और वामन पुरान दोनों में आया है। वामन पुराण में इस तीर्थ के महत्व के बारे में लिखा है कि इसी सरोवर में वह झँडा विद्यमान था, जिससे ब्रह्माजी तथा अन्य सृष्टि पैदा हुई-

यस्मिन स्थाने स्थितं ह्यण्डं तस्मिन सन्निहितं सरः।
अण्डमध्ये समुत्पन्नो ब्रह्मा लोकपितामहः।

वामन पुराण 22-35

वामन पुराण में इसका भी उल्लेख आया है कि ब्रह्मा की नाभि में पवित्र जल का भण्डार था। उसी पवित्र जल से सरोवर पूर्णतया भर गया था।

महाभारत में इस सरोवर के महत्व के बारे में लिखा है-

सन्निहित्यामुपस्पृश्य राहुग्रस्ते दिवाकरे।
अश्वमेघ शतं तेन इष्टं भवति शाश्वतम्॥

महाभारत, वन पर्व-83/167

अर्थ- सूर्य ग्रहण पर इस तीर्थ का स्पर्श मात्र कर लेने से सौ अश्वमेघों के फल की प्राप्ति होती है। इसी महाभारत में इस तीर्थ के महत्व के बारे में विस्तार पूर्वक अन्य जगह पर लिखा है कि इस पृथ्वी पर जितने भी तीर्थ हैं, नदी, सरोवर आदि हैं वे निःसंदेह प्रत्येक माह इस सरोवर में प्रकट होते हैं-

पृथ्वीव्यां यानी तीर्थानि अन्तरिक्षचराणि च।
नद्यो नदास्तडागाश्च सर्वप्रस्त्रवणनि च।

महाभारत, वन पर्व 83-168

इस तीर्थ के महत्व के विषय में महाभारत में यह उल्लेख भी आया है कि प्रत्येक महीने ब्रह्मादि देवता एवं तपस्वी ऋषि-मुनि भी यहाँ पर एकत्रित होते हैं। स्त्री अथवा पुरुष के द्वारा किया गया कोई भी पाप कर्म इस सरोवर में स्नान करने से नष्ट हो जाता है तथा उन्हें ब्रह्मलोक की प्राप्ति होती है।

पद्म पुराण में भी इस तीर्थ के बारे में वर्णन आया है कि सूर्य ग्रहण के मौके पर इस तीर्थ पर किया गया श्राद्ध एवं स्नान का फल सौ अश्वमेघ के यज्ञ के फल के बराबर माना जाता है।

अमावस्यां तथा चैव राहुग्रस्ते दिवाकरे।
यः श्राद्धं कुरुते मर्त्यस्तस्य पुण्यफलं श्रुणु॥
अश्वमेघसहस्त्रस्य सम्यगिष्टस्य यत्फलम्।
स्नातेव तदाप्नोति कृत्वा श्राद्धं च मानवः॥

पद्म पुराण आदि पर्व 27/82-83

स्कन्द पुराण में इसका महत्व बताते हुए लिखा है-

यस्तत्र भोजयेद् षड्रसं विधिपूर्वकम्।
एकैन भोजितेनैव कोटिर्भवति भोजिता

स्कन्द पुराण 7-81

अर्थ- इस तीर्थ में एक ब्राह्मण को विधिपूर्वक भोजन कराने से कोटिशः ब्राह्मणों को भोजन कराने के बराबर फल मिलता है। स्कन्द पुराण में प्राप्त वर्णन के अनुसार पाण्डवों ने अज्ञातवास के समय सन्निहित सरोवर के दक्षिणी तट पर शिवलिंग की स्थापना की थी।

इस सरोवर का पुनरुद्धार कुरुक्षेत्र विकास मण्डल द्वारा ही सम्पन्न हुआ था। वर्तमान में इस सरोवर की लम्बाई 1500 फुट और चौड़ाई 550 फुट है। विकास मण्डल के सराहनीय प्रयास से ही तीर्थ यात्रियों के स्नान हेतु लाल पत्थर की सुन्दर सीढ़ियाँ तथा सरोवर के चारों तरफ चबूतरे का निर्माण किया गया है। इसके साथ ही पक्के घाट भी बनाए गए हैं। सन्निहित सरोवर की दक्षिणी दिशा में कमल कुँज विकसित किया गया है।

इसी सरोवर के तट पर ध्रुव नारायण मंदिर के बीच में भगवान चतुर्भुज विष्णु का मंदिर है। पूर्वी भाग में भक्त शिरोमणि हनुमान तथा सिंहवाहिनी दुर्गा का मंदिर है तथा दुख भंजन मंदिर भी है।

इस सरोवर के निकट ही नागर शैली में लक्ष्मी नारायण मंदिर निर्मित किया गया है जो एक रमणीय मंदिर है तथा वास्तुकला की दृष्टि से एक दुर्लभ मंदिर है।

इस तीर्थ में प्रत्येक सोमवती अमावस्या को विशाल मेला लगता है। सूर्य ग्रहण के अवसर पर लाखों की सँख्या में श्रद्धालु भक्तगण इस सरोवर पर स्नान करने के लिए तथा पुण्य प्राप्ति हेतु आते हैं।

इसके आसपास स्थित मंदिरों में प्रात:काल तथा सांयकाल गूंजते शंखों की मधुर ध्वनि और आरती की मधुर आवाज मन को आकृष्ट करती है। पूजा में प्रयुक्त सुगँधित सामग्री समस्त वातावरण को सुगन्धमय बना देती है जो प्रत्येक मनुष्य को स्वत: ही अपनी ओर आकृष्ट कर लेती है।

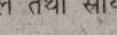

लोमश तीर्थ, लोहारमाजरा

लोहार माजरा में स्थित इस तीर्थ का नाम लोमश ऋषि के नाम पर पड़ा है। लोमश ऋषि का वर्णन महाभारत में एक बहुत बड़े कथावाचक के रूप में आता है। उनका नाम केवल महाभारत में ही नहीं अपितु पौराणिक साहित्य में भी उनका यही रूप देखने को मिलता है महाभारत एवं पुराणों में अधिकाँश आख्यान तथा कथाएँ इन्हीं के द्वारा कहीं गई हैं।

महाभारत के वन पर्व के 47वें अध्याय में कहा गया है कि एक बार स्वर्ग में लोमश ऋषि के जाने पर उन्होंने देखा कि देवराज इन्द्र के सिंहासन के आधे भाग पर अर्जुन बैठा है। उनके मन में प्रश्न आया कि अर्जुन को किन गुणों के कारण यह सम्मान प्राप्त हुआ है? इन्द्र लोमश ऋषि के मन की बात जान गए और ऋषि के मन में उठे प्रश्न का उत्तर दे दिया। इसके पश्चात इन्द्र और अर्जुन का संदेश लेकर महर्षि लोमश काम्यक वन में निवास कर रहे धर्मराज युधिष्ठिर के पास पहुँचे और अर्जुन की कुशल क्षेम का ब्यौरा देकर उसके द्वारा दिव्यास्त्रों की प्राप्ति के बारे में भी समाचार सुनाया।

इसके पश्चात् महर्षि लोमश ने धर्मराज युधिष्ठिर को परशुराम, महर्षि अगस्त्य, देवताओं के हितार्थ एवं रक्षार्थ महर्षि दधिचि के अस्थिदान, कपिल के क्रोध से सगर के साठ हजार पुत्रों का विनाश, भागीरथ के भगीरथ प्रयत्न द्वारा गंगा के पृथ्वी पर अवतरण एवं गंगा के द्वारा सगर के पुत्रों का उद्धार, राजा सगर का तप, शिव द्वारा उन्हें वर प्राप्ति तथा राम कथा एवं अनेक कथाओं को सुनाया।

महाभारत के वन पर्व के 165 वें अध्याय के 46वें श्लोक में इन्हें उत्तर दिशा का ऋषि बताया गया है। यहाँ एक कच्चा तालाब है जिसके पश्चिम में एक नवनिर्मित समाधि है। मंदिर परिसर में ही कथा स्थल भी है।

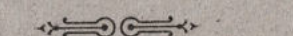

सोम तीर्थ, सैंसा

यह तीर्थ कुरुक्षेत्र से 34 किमी० दूर सैंसा नामक गाँव में स्थित था जिसे पुराणों में सोमतीर्थ के रूप में वर्णित है परन्तु वर्तमान में यह विलुप्त हो चुका है। अब यहाँ पर उस जगह खेती की जा रही है।

इस तीर्थ का वर्णन महाभारत, वामन पुराण, पद्म् पुराण और ब्रह्मपुराण में आया है। वामन पुराण में इस तीर्थ को सोम (चन्द्र) देव से सम्बन्धित बताया गया है। दक्ष प्रजा पति के शापवश एक बार सोम देव टी० बी० (राजयक्ष्या) से पीड़ित हो गए थे। इसके बाद देवताओं के आग्रह पर दक्ष प्रजापति ने सोमदेव को कठोर तप करने के लिए इस स्थान पर भेजा। कठोर तप के कारण सोमदेव को इस व्याधि से मुक्ति मिली।

ततो गच्छेत विप्रेन्दाः सोमतीर्थमनुत्तमम्।
यत्र सोमस्तपस्तप्त्वा व्याधिमुक्तोऽभवत् पुरा॥
तत्र सोमेश्वरं दृष्टवा स्नात्वा तीर्थवरे शुभे।
राजसूयस्य यज्ञस्य फलं प्राप्नोति मानवः।

व्याधिभिश्च विनिर्मुक्तः सर्वदोषविवर्जितः॥
सोमलोकमवाप्नोति तत्रैव रमते चिरम्।

वामन पुराण 94/33-35

अर्थ- जिस तीर्थ पर सोमदेव तप करके व्याधि से मुक्त हुए ऐसे श्रेष्ठ सोमतीर्थ में स्नान कर एवं वहाँ स्थित सोमेश्वर का दर्शन करने पर मनुष्य राजसूय यज्ञ का फल प्राप्त करता है तथा समस्त रोग, शोक व दोष से मुक्त होकर सोमलोक को प्राप्त कर चिरकाल तक वहाँ आनन्दपूर्वक रहता है।

वामन पुराण में एक स्थान पर ऐसा भी लिखा है कि इस तीर्थ पर सोमदेव ने भीषण उग्र तपस्या करके द्विज राज्य को प्राप्त किया था तथा इस तीर्थ के महत्व के विषय में लिखा है कि इस तीर्थ में स्नान करके पितरों की पूजा करने वाला व्यक्ति कार्तिक मास के चन्द्रमा के समान निर्मल होकर स्वर्ग को जाता है।

यद्यपि महाभारत में वन पर्व के 83वें अध्याय में सोमतीर्थ को जयन्ती (वर्तमान में जींद) में स्थित बताया गया है। वहाँ भी इस तीर्थ में स्नान करने वाले व्यक्ति को राजसूय यज्ञ के समान फल प्राप्त होता है। वामन पुराण में भी वर्णित फल उतना ही बताया गया है जितना फल महाभारत में बताया गया है। महाभारत के वन पर्व के 83वें अध्याय की श्लोक संख्या 114-115 में पुनः सोम तीर्थ का उल्लेख है जहाँ जाने वाला मनुष्य सोमलोक में जाता है।

ततो गच्छेत् नरश्रेष्ठ सोमतीर्थमनुत्तमम्।
तत्र स्नात्वा नरो राजन् सोमलोकमवाप्नुयात्॥

महाभारत वन पर्व 83/114-115

अर्थ हे नरश्रेष्ठ! इसके बाद सर्वश्रेष्ठ सोमतीर्थ में जाना चाहिए। वहाँ स्नान करने से मनुष्य सोमलोक में जाता है।

इसी अध्याय में 185वें श्लोक में पुनः सोमतीर्थ का सेवन करने वाले व्यक्ति को निःसंदेह सोमलोक में जाने के तथ्य को पुष्ट किया गया है।

इस तीर्थ के पूर्वी दिशा में दो एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ एक सरोवर है।

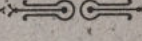

ब्रह्मतीर्थ ब्रह्मस्थान, थाणा

कुरुक्षेत्र का प्रत्येक गाँव एक विशिष्ट तीर्थ है। प्रत्येक ग्राम का नाम भी उन्हीं तीर्थों के आधार पर रखा गया है। किसी-किसी ग्राम का नाम तो तीर्थ के नाम से पूरी तरह समानता रखता है जबकि कुछ ग्रामों के नाम कालान्तर में अपभ्रँश होकर बदल गए हैं। शायद थाणा का नाम भी ब्रह्मस्थान का ही अपभ्रँश रूप है।

ब्रह्मस्थान नामक यह तीर्थ कुरुक्षेत्र के समस्त तीर्थों में अपना प्रमुख स्थान रखता है। इस तीर्थ का वर्णन महाभारत के वन पर्व में मिलता है। महाभारत वन पर्व के 83वें अध्याय में कुरुक्षेत्र में स्थित ब्रह्माजी से सम्बन्धित तीर्थों की नामावली के अंतर्गत ब्रह्मतीर्थ, ब्रह्मयोनि, ब्रह्मसर एवं ब्रह्मोदुम्बर तीर्थ का वर्णन स्पष्ट रूप से मिलता है। परन्तु वहाँ ब्रह्मस्थान नामक इस तीर्थ का स्पष्ट उल्लेख एवं महत्व वन पर्व के 84वें अध्याय में वर्णित है।

ततोगच्छेत राजेन्द्र ब्रह्मस्थानमनुत्तमम्।
तत्राभिगम्य राजेन्द्र ब्रह्माणं पुरुषर्षभ।
राजसूयाश्वमेघाभ्यां फलं प्राप्नोति मानवः।

महाभारत वनपर्व 84/103-104

अर्थ हे राजेन्द्र! इसके बाद व्यक्ति को सर्वश्रेष्ठ तीर्थ ब्रह्मस्थान पर जाना चाहिए जो ब्रह्मा से सम्बन्धित है। वहाँ जाने से व्यक्ति को राजसूय एवं अश्वमेघ यज्ञों का फल मिलता है।

इस तीर्थ के महत्व को वन पर्व का 85वें अध्याये का निम्न श्लोक स्पष्ट करता है।

ब्रह्मस्थानं समासाद्य त्रिरात्रोपोषितो नरः।
गोसहस्त्रफलं विन्द्यात् स्वर्गलोकं च गच्छति।

महाभारत वन पर्व 85-35

अर्थ- ब्रह्मस्थान तीर्थ में तीन रात्रि रहने से मनुष्य सहस्त्र गायों के दान का फल प्राप्त करता है तथा स्वर्ग को प्राप्त करता है।

वामन पुराण में भी इस तीथ के नाम एवं महत्व का उल्लेख आया है-

ततो गच्छेत सुमहद् ब्रह्मणः स्थानमनुत्तमम्
यत्र वर्णावरः स्नात्वा ब्रह्मण्यं लभते नरः।
ब्राह्मणश्य विशुद्धात्मा परंपदम वाप्नुयात्॥

इसी तीर्थ के पूर्वी तट पर बल्लीवट नाम का एक पेड़ है जिसका प्रमाण नरसिंह पुराण में मिलता है। नरसिंह पुराण में वर्णन आया है कि बल्लीवट में भगवान की महायोग नामक मूर्ति का निवास है। इसी वृक्ष के नीचे महर्षि मार्कण्डेय ने महर्षि भृगु से

महामृत्युंजय मंत्र की दीक्षा प्राप्त की थी। इसका वर्णन नरसिंह पुराण के सातवें अध्याय में आया है।

यहाँ के निवासियों में इस तीर्थ के प्रति अगाध श्रद्धा तथा विश्वास मिलता है। आम व्यक्तियों में ऐसा विश्वास पाया जाता है कि यहाँ श्रद्धा रखने से अभिष्ट पद को पाया जा सकता है। इसी कारण यहाँ के निवासी इस जगह पर प्रत्येक शनिवार को प्रसाद बाँटने के लिए आते हैं।

अभी कुछ वर्ष पहले घटित दैवी एवं चमत्कारिक दृश्य को देखकर लोगों में इस तीर्थ के प्रति श्रद्धा बहुत अधिक बढ़ गई है। वह घटना यह है कि कुछ वर्ष पहले गाँव के पास बहने वाली सरस्वती नदी का तट टूटने के कारण सारा सरोवर पानी से भर गया। सरकार ने पानी निकालने का खर्चा लगभग 7000 रुपये ग्राम पंचायत पर डाल दिया परन्तु ग्राम पंचायत इसे देना नहीं चाहती थी। उसी समय एक चमत्कार हुआ कि तालाब के हिस्सें में कमल के पौधे उग गए और उनकी जड़ों में भीस लग गई। इससे ग्राम पंचायत को काफी आमदनी हो गई तथा पंचायत ने यह कर चुकता कर दिया। सबसे अधिक आश्चर्य की बात यह थी कि इसके बाद सरोवर में कमल का एक भी पौधा पैदा नहीं हुआ।

यहाँ पर एक प्राचीन शिव मंदिर भी है। इस मंदिर का शिखर सप्त रथ आधार वाले नागर शैली का है। इसकी लम्बाई 30 फुट है। मंदिर में मण्डप एवं गृर्भगृह है जिसमें शिवलिंग स्थापित है। मंदिर के अन्दर आधुनिक टाइलें लगी हैं। इन टाइलों में देवी-देवताओं तथा सिक्ख गुरुओं की छवियाँ चित्रित हैं।

इस तीर्थ के उत्तर में एक अत्यन्त सुन्दर उत्तर मध्यकालीन मंदिर है। इसमें गर्भगृह के साथ मण्डप भी है। इसका शिखर नागर शैली का है जिसमें बाँस से बनी शिखराकृतियों का चित्रण है। तीर्थ के उत्तर पश्चिम में एक सरोवर है। सरोवर पर नाहाने के लिए कच्चे घाट बने हैं परन्तु प्राचीन काल में यहाँ पक्के घाट होने के प्रमाण मिले हैं। गुप्त काल की यहाँ से मिलने वाली ईंटों से सिद्ध होता है कि पहले यहाँ पक्के घाट बने थे। इस विशाल सरोवर में अनेक प्रकार के पक्षी देखने को मिलते हैं।

प्राकृतिक विशेषताओं के कारण यहाँ एक आदर्श पक्षी विहार बनाकर धार्मिक महत्व के साथ-साथ इसे एक पर्यावरणीय पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया जाना चाहिए।

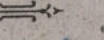

भूरिश्रवा तीर्थ और सैयदा

यह तीर्थ कुरुवंशीय नरेश सोमदत्त के पुत्र भूरिश्रवा से सम्बन्धित है। यह तीर्थ कुरुक्षेत्र में भौर सैयदा में स्थित है।

भूरिश्रवा के भूरि और शल नाम के दो भाई और थे।

ये तीनों भाई पाण्डवों के अतुल पराक्रम से भली भाँति परिचित थे। इसी कारण इन्होंने द्रुपद नगर में दुर्योधन को पाण्डवों से युद्ध न करने के स्थान पर संधि करने की सलाह दी थी। ये महाभारत के युद्ध में एक अक्षौहिणी सेना लेकर कौरव पक्ष में सहायता हेतु सम्मिलित हुए थे। भीष्म पितामह ने इनकी गणना इनके पराक्रम को

दृष्टि में रखते हुए रथियों के यूथपतियों के यूथपति में की थी।

द्रोण पर्व में पाण्डव पक्ष के अनेक योद्धाओं शंख, मणिमान, शिखंडी, भीमसेन, धृष्टकेतु और सात्यकि के साथ इनका भीषण युद्ध हुआ था। इन्होंने सात्यकि के दस पुत्रों का वध किया था। धृष्टकेतु भी इनसे पराजित हो गया था। इन्होंने मणिमान को भी पराजित कर दिया था। अर्जुन ने इनकी दाहिनी भुजा को काट डाला था। जब ये आमरण अनशन पर बैठ गए तो सात्यकि ने अपने पुत्रों का बदला लेने के लिए इनका वध कर दिया।

महाभारत के स्वर्गारोहण पर्व में उल्लेख है कि अपनी मृत्यु के बाद भूरिश्रवा विश्वदेवों में प्रविष्ट हो गया था। इस तीर्थ से सम्बन्धित अन्य कोई सामग्री महाभारत एवं पुराणों में प्राप्त नहीं होती है।

इस तीर्थ में भूतेश्वर महादेव मंदिर माता, राजराजेश्वरी मंदर और संकट मोचन हनुमान मंदिर हैं। भूतेश्वर महादेव का मंदिर उत्तर मध्यकालीन का है और राजेश्वरी का मंदिर तथा हनुमान जी का मंदिर आधुनिक मंदिर हैं।

भूतेश्वर महादेव मंदिर में गर्भगृह के सामने मण्डप है जिसका शिखर शंक्वाकार है। शिखर के ऊपर एक कलश आयुध के रूप में स्थित है। अष्ट भुजा से निर्मित गर्भगृह का शिखर उत्तर मुगलकालीन गुम्बदाकार है। गर्भ गृह की आँतरिक भित्तियों में भित्ति चित्र देखने को मिलते हैं।

इस तीर्थ के उत्तर में सरोवर स्थित है। इसमें दक्षिण की तरफ दो घाटों का निर्माण हुआ है। इन घाटों को सरस्वती गंगा घाटों के नाम से जाना जाता है। सरोवर को वर्तमान में मगरमच्छ विहार का

रूप प्रदान किया गया है सरोवर में प्रचुर मात्रा में उगने वाले कमल इसकी शोभा में चार चाँद लगा रहे हैं।

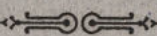

शुक्र तीर्थ, सतौड़ा

इस तीर्थ का नाम दैत्यों के गुरु शुक्राचार्य के नाम पर पड़ा है। यह भृगु ऋषि के पुत्र थे। इनका एक नाम उशाना भी था। महर्षि शुक्र ही ग्रह बनकर तीनों लोकों में वृष्टि, अनावृष्टि, भय एवं अभय उत्पन्न करते हैं। इन्होंने मृतसँजीवनी विद्या के बल पर युद्ध में मरे हुए दानवों को फिर से जीवित कर दिया था। इन्हीं कि पुत्री देवयानी का शुभ विवाह सम्राट ययाति से हुआ था। सतौड़ा में स्थित तीर्थ पर महर्षि शुक्राचार्य ने इस तीर्थ पर तपस्या की थी।

ब्रह्मपुराण में इस तीर्थ का महत्व इस प्रकार बताया गया है-

शुक्रतीर्थमिति ख्यातं सर्वसिद्धिकरं नृणाम्।
सर्वपापप्रशमनं सर्वव्याधिविनाशनम्॥

ब्रह्मपुराण 95-1

अर्थ- शुक्र तीर्थ व्यक्तियों की सभी इच्छाओं को पूर्ण करता है। व्यक्ति के सभी प्रकार के पाप और सब प्रकार की व्याधियाँ इस तीर्थ में स्नान करने से नष्ट हो जाती हैं।

दैत्य गुरु शुक्राचार्य ने भगवान शिव को प्रसन्न कर मृतसंजीवनी विद्या प्राप्त की थी। इस तीर्थ की पूर्व दिशा में सरस्वती नदी प्रवाहित हो रही है एवं इसके तट पर एक घाट है परन्तु आजकल इस घाट

र पानी नहीं है। इस घाट में 10 सीढ़ियाँ तथा 2 अष्टभुज आकृति
ी बुर्जियाँ हैं जो लखौरी ईंटों से बनी हुई हैं।

घाट से 100 किमी० की दूरी पर पश्चिम दिशा में मंदिर है।
दिर और घाट के बीच में अब बस्ती बनाकर व्यक्ति रहने लगे हैं।
दिर का प्रवेश द्वार मुगलकालीन शैली में निर्मित एक विशाल
हराब से अलँकृत है। मंदिर के बाहरी भाग में एक बहुत बड़ा
आ है जिसका आधा हिस्सा मंदिर के अन्दर से दिखाई देता है।
दिर के प्रवेश द्वार से जुड़ा हुआ परकोटा भी अंदर से मेहराबों से
लंकृत है।

आजकल इस परकोटे के भीतरी एवं बाहरी हिस्से जीर्णशीर्ण
वस्था में पहुँच गए हैं। इस परकोटे के मध्य में नागर शैली में
र्मित एक शिव मंदिर है जिसमें एक मण्डप तथा एक गर्भगृह बना
। गर्भगृह की ऊँचाई मण्डप से अधिक है। मंदिर के गर्भगृह में
वलिंग स्थापित है तथा यहाँ नन्दी मण्डप भित्तिचित्रों से शोभायमान
। इस नन्दी मण्डप के तीन द्वार हैं जिसकी भित्तियों में ऋषियों एवं
द्धियों के बीच में गणेश, गोपियों के बीच में श्रीकृष्ण तथा
गवान विष्णु के नाभिकमल से ब्रह्मा की उत्पत्ति, भैरव आदि
ार्मिक चित्रों को बनाया गया है। संभवत: इस मंदिर का निर्माण
7वीं-18वीं शताब्दी के मध्य में किया गया होगा।

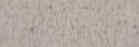

द्वितीय सर्ग

आयी हुई मृत्यु से कहा अजेय भीष्म ने कि
योग नहीं जाने का अभी है, इसे जानकर,
रुकी रहो पास कहीं, और स्वयं लेट गए
बाणों का शयन, बाण का ही उपधान कर।
व्यास कहते हैं, रहे यों ही वे पड़े विमुक्त,
काल के करों से छीन मुष्टिगत प्राण कर।
और पंथ जोहती विनीत कहीं आसपास
हाथ जोड़ मृत्यु रही खड़ी आदेश मानकर।
चोटी चढ़ जीवन के आर-पार हेरते से
योगलीन लेटे थे पितामह गँभीर से।
देखा धर्मराज ने, शोभा प्रसन्न फैल रही
श्वेत शिरोरुह, शर ग्रथित शरीर से।
करते प्रणाम, छूते सिर से पवित्र पद,
उँगली को धोते हुए लोचनों के नीर से,
"हाय पितामह, महाभारत विफल हुआ"
चीख उठे धर्मराज व्याकुल अधीर से
वीरगति पाकर सुयोधन चला गया है,
छोड़े मेरे सामने अशेष ध्वंस का प्रसार
छोड़े मेरे हाथ में शरीर निज प्राणहीन
व्योम में बजाता विजय का नगाड़ा बार-बार
और यह मृतक शरीर जो बचा है शेष,

चुप-चुप, मानो, पूछता है मुझसे पुकार
विजय का एक उपहार में बचा हूँ, बोलो
जीत किसकी है और किसकी हुई है हार?
हाय, पितामह हार किसकी हुई है यह?
ध्वंस, अवशेष पर सिर धुनता है कौन?
कौन भस्मराशि में विफल सुख ढूँढ़ता है?
लपटों से मुकुट का पट बनाता है कौन?
और बैठ मानव की रक्त सरिता के तीर
नियति के व्यंग्य भरे अर्थ गुनता है कौन?
कौन देखता है शवदाह बन्धु बान्धवों का?
उत्तरा का करुण विलाप सुनता है कौन?
जानता नहीं जो परिणाम महाभारत का,
तन-बल छोड़ मैं मनोबल से लड़ता
तप से, सहनशीलता से त्याग से सुयोधन को
जीत नयी नींव इतिहास की मैं धरता
और कहीं वज्र गलता न मेरी आह से जो
मेरे तप से नहीं सुयोधन सुधरता
तो भी हाय यह रक्त पात नहीं करता मैं,
भाइयों के संग कहीं, भीख माँग मरता।
किन्तु हाय, जिस दिन बोया गया युद्ध बीज
साथ दिया मेरा नहीं मेरे दिव्य ज्ञान ने
उलट दी मति मेरी भीम की गदा ने और
पार्थ के शरासन ने, अपनी कृपाण ने

और जब अर्जुन को मोह हुआ रण-बीच,
बुझती शिखा में दिया घृत भगवान ने
सबकी सुबुद्धि पितामह हाय, मारी गई
सबको विनष्ट किया एक अभिमान ने।
कृष्ण कहते हैं युद्ध पाप रहित या पवित्र
प्राण जलते हैं पल-पल परिताप से
लगता मुझे है, क्यों मनुष्य बच पाता नहीं
जलाने वाला इस पुराचीन अभिशाप से?
और महाभारत की बात क्या? गिराए गए
जहाँ छल-छद्म से वरेण्य वीर आप से,
अभिमन्यु-वध औ सुयोधन का वध हाय,
हममें बचा है, यहाँ कौन, किस पाप से?
एक ओर सत्यमयी गीता भगवान की है,
एक ओर जीवन की विरति प्रबुद्धि है
जानता हूँ लड़ना पड़ा था हो विवश किन्तु
लोहू-सनी जीत मुझे दीखती अशुद्ध है
ध्वंसजन्य सुख या कि साश्रु दुख शान्तिजय
ज्ञान नहीं कौन बात नीति के विरुद्ध है
जानता नहीं मैं कुरुक्षेत्र में खिला है पुण्य
या महान पाप यहाँ फूटा बन युद्ध है।